Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۝

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 21

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

17 रमज़ान 1440 हिजरी कमरी 23 हिजरत 1397 हिजरी शमसी 23 मई 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

आप लोग सच्चे दिल से तौबा करो। तहज्जुद में उठो ,दुआ करो,दिल को दरुस्त करो,कमज़ोरियों को छोड़ दो और ख़ुदा तआला की रज़ा के अनुसार अपने कथन तथा कर्म बनाओ। यक़ीन रखो कि जो इस नसीहत को विर्द बनाएगा और व्यावहारिक रूप से दुआ करे और व्यावहारिक रूप से इल्तिजा ख़ुदा के सामने लाए । अल्लाह तआला इस पर फ़ज़्ल करेगा और इस के दिल में तबदीली होगी। ख़ुदा से निराश मत हो।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

जमाअत के लिए नसीहत

मैं बार बार कह चुका हूँ कि जितना कोई क़ुरब हासिल करता है उतना पकड़ के योग्य है। अहले बैत ज़्यादा काबिल माख़ज़ा थे। वे लोग जो दूर हैं वे काबिल माख़ज़ा नहीं लेकिन तुम हो। अगर तुम में उन पर कोई ईमान की वृद्धि नहीं तो तुम में और उनमें क्या फ़र्क़ हुआ। तुम हज़ारों की नज़र में हो। वे लोग गर्वनमैंट के जासूसों की तरह तुम्हारी हरकतें को देख रहे हैं। वे सच्चे हैं। जब मसीह के साथी सहाबा रज़ि के साथ होने लगे हैं तो क्या आप वैसे हैं ?जब आप वैसे नहीं तो आप गिरफ़्त के योग्य हैं। मानो प्रारम्भिक हालत है लेकिन मौत का क्या एतबार है। मौत एक ऐसा अवश्यमेव बात है जो हर एक को पेश आती है। जब ये हालत है तो फिर आप क्यों ग़ाफ़िल हैं। जब कोई शख़्स मुझ से सम्बन्ध नहीं रखता तो यह बात दूसरी है लेकिन जब आप मेरे पास आए ,मेरा दावा क़बूल किया और मुझे मसीह माना तो मानो एक तरह से आपने सहाबा किराम के बराबर होने का दावा कर दिया। तो क्या सहाबा रज़ि ने कभी सिदक़ तथा वफ़ा पर क़दम मारने से पीछे हटाया। उन में कोई सुस्ती थी। क्या वे दिल को तकलीफ पहुंचाने वाले थे? क्या उनको अपना भवनाओं पर का काबू न था? वे विनम्र मिज़ाज के ना थे ? उनमें अत्याधिक विनय था। अत: दुआ करो कि ख़ुदा तुम को भी वैसी ही तौफ़ीक़ प्रदान करे क्योंकि विनय और विनम्रता की ज़िन्दगी कोई धारण नहीं कर सकता जब तक कि अल्लाह तआला उस की मदद ना करे। अपने आपको टटोलो और अगर बच्चा की तरह अपने आपको कमज़ोर पाओ तो घबराओ नहीं اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ की दुआ सहाबा की तरह जारी रखो। रातों को उठो और दुआ करो कि ख़ुदा तुम को अपनी राह दिखलाए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ि ने भी क्रम से तरबीयत पाई। वे पहले क्या थे। वो एक किसान की बीज बोने की तरह थे। फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पानी दिया। आपने उनके लिए दुआएं कीं। बीज सही था और ज़मीन अच्छी। तो इस पानी देने से फल अच्छा निकला। जिस तरह हुज़ूर अलैहिस्सालम चलते इसी तरह वे चलते। वे दिन का या रात का इंतज़ार ना करते थे। तो आप लोग सच्चे दिल से तौबा करो। तहज्जुद में उठो ,दुआ करो,दिल को दरुस्त करो,कमज़ोरियों को छोड़ दो और ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार अपने कथन तथा कर्म बनाओ। यक़ीन रखो कि जो इस नसीहत को विर्द बनाएगा और व्यावहारिक रूप से दुआ करे और व्यावहारिक रूप से इल्तिजा ख़ुदा के सामने लाए । अल्लाह तआला इस पर फ़ज़्ल करेगा और इस के दिल में तबदीली होगी। ख़ुदा से निराश मत हो।

बा करीमां कार हा दुशवार नीस्त

कुछ लोग कहते हैं कि हम को क्या कोई वली बनना है ? अफ़सोस उन्होंने कुछ क़द्र ना की। बेशक इन्सान ने वली बनना है। अगर वे सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ता) पर चलेगा तो ख़ुदा भी इस की तरफ़ चलेगा। और फिर एक जगह पर इस की मुलाक़ात होगी। इस की इस तरफ़ से हरकत चाहे धीरे होगी लेकिन इस के मुक़ाबला पर ख़ुदा तआला की हरकत बहुत जल्द होगी , अत: यह आयत इसी तरफ़ इशारा करती है। وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا الخ (अलानकबोत :70) अत: जो जो बातें मैंने आज वसीयत की हैं इन को याद रखो कि इन्हा पर नजात का भरोसा है। तुम्हारे मामले ख़ुदा और ख़लक़ के साथ ऐसे होने चाहिऐं जिन में केवल इलाही प्रसन्नता ही हो। अत: इस से तुम وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ الخ (सूरत अल्जुम्अ: :4) के मिस्दाक़ बनना है।

इस्त्राईली और इस्माईली सिलसिलों में मसीह की बिअसत

हाँ जैसे कि आगे बयान हो चुका है ख़ुदा की सूक्ष्म हिक्मत ने यही पसंद किया कि इस्राईली और इस्माईली दो सिलसिले दुनिया में क़ायम करे। पहला सिलसिला हज़रत मूसा से शुरू हो कर हज़रत मसीह तक ख़त्म हुआ और ये चौदह सौ बरस तक रहा। इसी तरह हज़रत रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लेकर आज चौदह सौ बरस पर एक मसीह के आने का इशारा है। संख्या चौदह को विशेष सम्बन्ध एक यह भी है कि इन्सान चौदह वर्ष पर बालिग़ हो जाता है। हज़रत मूसा अलैहिस्सालम को ख़बर मिली थी कि मसीह उस वक़्त आएगा जब यहूदियों में बहुत फ़िर्क़े होंगे। उनकी आस्थाओं में बहुत मतभेद होगा। कुछ को फ़रिश्तों के वजूद से इनकार। कुछ को क़यामत तथा मुर्दों का दोबारा ज़िन्दा किया जाने से इनकार। अत: जब तरह तरह की अमली बुरी धारणों फैल जाएगी तब बतौर हुक्म के मसीह उन में आएगा। इसी तरह हमारे हादी कामिल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमको सूचना दी कि जब तुम में भी यहूदियों की तरह बहुत से फ़िर्क़े हो जाएंगे, उनकी तरह विभिन्न किस्म की बुरी आस्थाएं और बुरे कर्म शुरू होंगे, उल्मा यहूद की तरह कुछ-कुछ के इन्कार करने वाले होंगे। इस वक़्त इस उम्मत का मसीह भी बतौर हुक्म के आएगा जो क़ुरआन से हर बात का फ़ैसला करेगा। वह मसीह की तरह क़ौम के हाथ से सताया जाएगा और काफ़िर क़रार दिया जाएगा। अगर उन लोगों ने कम समझी से इस आदमी को दज्जाल और काफ़िर कहा तो ज़रूर था कि ऐसा होता क्योंकि हदीस में आ चुका था कि आने वाला मसीह काफ़िर और दज्जाल ठहराया जाएगा लेकिन जो अक़ीदा आप को सिखलाया जाता है वह बिलकुल साफ़ और स्पष्ट है और दलील का मुहताज भी नहीं। स्पष्ट तर्क अपने साथ रखता है।

वफ़ात मसीह

पहला झगड़ा वफ़ात मसीह का ही है। खुली खुली आयतें उस के समर्थन में हैं

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-11)

दुनियावी बेहतरी के जो सामान अल्लाह तआला ने पहुंचाए हैं उनकी वजह से अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल नहीं होना

अगर ये याद रखेंगी तो दुनिया तो मिल ही जाएगी लेकिन साथ ही अल्लाह तआला के बेशुमार फ़ज़्लों से हिस्सा लेने वाली भी बनेंगी।

पर्दे की पाबंदी करना हर औरत की ज़िम्मेदारी है, हर बच्ची की ज़िम्मेदारी है

अपने लिबास को लज्जा वाला लिबास बनाना हर औरत और बच्ची की ज़िम्मेदारी है और यही नमूने हैं जो अगली नस्लों मैं फिर क़ायम होंगे।

यही नमूने हैं जो जमाअत की इन्फ़िरादियत को भी क़ायम रखेंगे, यही नमूने हैं जो आप को तब्लीग़ के मैदान में भी काम आएँगे।

हमेशा याद रखें कि हक़ीक़ी ज़िन्दगी दुनिया में डूबने में नहीं है बल्कि धर्म पर क़ायम होने में है

अगर अपनी और अपनी औलादों की हक़ीक़ी ज़िन्दगी चाहती हैं तो अपने इस अहद को कि हम धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखेंगी पूरा करें।

जलसा सालाना बेल्जियम में सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का औरतों से ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

फ़ैमिली मुलाक़ात

आज शाम के इस सैशन में 25 फ़ैमिलीज़ के 110 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया । मुलाक़ात करने वाली इन फ़ैमिलीज़ का सम्बन्ध ब्रस-ल्ज़ के इलावा बेल्जियम की जमाअतों अनटोरपन , हा सिल्ट और ल्यूज से था। इस के इलावा पाकिस्तान , फ्रांस और कबाबीर से आने वाली फ़ैमिलीज़ ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी दोस्त और फ़ैमिलीज़ ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को कृपा करते हुए चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की सआदत पाने वाली लगभग सभी वे फ़ैमिलीज़ थीं जो अपनी ज़िन्दगी में पहली बार अपने प्यारे आक़ा से मिल रही थीं।

एक फ़ैमिली की ज़िन्दगी में पहली मुलाक़ात थी। पति ने अपने प्रतिक्रिया को प्रकट करते हुए कहा कि मेरी 46 साल की उम्र में हुज़ूर अनवर से यह पहली मुलाक़ात थी। कमरे में दाख़िल हो कर ऐसा लगा कि टांगों में जान नहीं है और ज़बान पर अलफ़ाज़ नहीं थे कि हम किस तरह हुज़ूर से बात करें। यह हमारी एक दो मिनट की मुलाक़ात हमारी ज़िन्दगी की क़ीमती पूंजी है। हम हमेशा उन लम्हों को याद करते रहेंगे और कभी नहीं भूलेंगे।

उनकी पत्नी कहने लगीं कि हुज़ूर अनवर का चेहरा मुबारक देखते ही ऐसे लगता है कि हम पर फ़रिश्तों का साया है। ख़िलाफ़त से जुड़े रहना ही हमारा सबसे बड़ा मिशन होना चाहिए। ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहना होगा तो हमारा हर क़दम जमाअत के साथ मज़बूत होता चला जाएगा। अलहमदु लिल्लाह। हमारे ऊपर हमारे ख़लीफ़ा वक़्त का हाथ है। उनकी दुआओं का हाथ है।

एक नौजवान छात्र कहने लगे कि 14 साल बाद हुज़ूर अनवर से मेरी मुलाक़ात हुई है। अंदर जाने से पहले मुझे बहुत ज़्यादा घबराहट थी। ख़लीफ़ा वक़्त के सामने बात करना बहुत मुश्किल होता है। जब इन्सान ख़लीफ़ा वक़्त के सामने हो तो चेहरा देखना बड़ा मुश्किल होता है। इन्सान अपनी नज़र नीचे कर के बात करता है। मैंने हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने का सौभाग्य हासिल किया और अपने ख़ानदान का परिचय करवाया। हुज़ूर अनवर ने मुझे एक क़लम तोहफ़ा दिया। मैं अब इस को सँभाल कर रखूंगा।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम सवा आठ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने जलसा गाह तशरीफ़ ले जा कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर वापस मिशन हाऊस अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

15 सितंबर 2018 (दिनांक शनिवार)

जलसा सालाना बेल्जियम का दूसरा दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुब्ह छः बजे मार्की मैं तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुब्ह हुज़ूर अनवर ने डाक देखी और विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा किया। आज प्रोग्राम के अनुसार लजना जलसा गाह में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का औरतों से ख़िताब था। प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ 11 बज कर 55 मिनट पर मिशन हाऊस से रवाना हो कर 12 बजकर 5 मिनट पर लजना जलसा गाह में तशरीफ़ लाए ।

नाज़िमे आला तथा नेशनल सदर लजना इमाउल्लाह बेल्जियम ने अपनी नाज़मात के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का स्वागत किया और औरतों ने बड़े जोश के साथ नारे बुलंद करते हुए अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया। प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिया सबाहत एहसान ने की और इस के बाद उस का उर्दू ज़बान में अनुवाद प्रस्तुत किया।

इसके बाद प्रिया आयशा रफ़ीक़ ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे रहमहु-ल्लाह तआला का मंजूम कलाम :

इक रात मफ़ासिद की वह तीर व तार आई
जो नूर की हर शम्मा ज़ुलमात पे वार आई
तारीकी पे तारीकी , गुमराही पे गुमराही
इबलीस ने की अपने लश्कर की सफ़-आराई

के मुंतख़ब अशआर ख़ुश-अल्हानी से पढ़ कर सुनाए। इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा का क्षेत्र में नुमायां कामयाबी हासिल करने वाली 36 छात्राओं को अस्नाद प्रदान फ़रमाए और हज़रत बेगम साहिबा मद ज़िल्लाह आली ने इन छात्राओं को मैडल पहनाए। शिक्षा के ऐवार्ड हासिल करने वाली इन ख़ुशनसीब छात्राओं के नाम निम्नलिखित हैं।

आईशा तारिक़ साहिबा पुत्री आदरणीय राना तारिक़ साहिब A Levels in Human Sciences

अंबर अहमद साहिबा पुत्री आदरणीय वसीम अहमद साहिब A Levels in Human Sciences

शफ़क़ नदीम साहिबा पुत्री आदरणीय मिर्ज़ा नदीम अहमद साहिब A Levels

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं सोता भी हूँ और नमाज़ भी पढ़ता हूँ। रोज़ा भी रखता हूँ और कभी ,नहीं भी रखता। और औरतों से निकाह भी करता हूँ। हे उस्मान! तू अल्लाह से डर। तुझ पर तेरी बीवी का हक़ है, तेरे मेहमान का हक़ है और ख़ुद तेरे नफ़्स का भी तुझ पर हक़ है। अतः कभी कभी रोज़ा भी रखो और कभी ना रखो। नमाज़ भी पढ़ो और सोया भी करो।

अबू बकर रज़ि अगर बेनफ़्स था तो उसने ऐसे लालची को क्यों माना और अगर वह वाक़ई में बेनफ़्स था तो फिर स्वीकार करना पड़ेगा कि इस का आक़ा भी बेनफ़्स था। यह एक बहुत बड़ी दलील है जिसको रद्द करना आसान नहीं।

रोब और दबदबा तीन चीज़ों से ही होता है या तो ईमान से होता है या इल्म से होता है या रुपया से होता है। अल्लाह तआला ने तीनों चीज़ें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम की जमाअत में भी पैदा कर दें।

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि कहते हैं कि यह वह वक़्त था जब मेरे दिल में ईमान ने अपनी जगह पक्की कर ली और मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत हो गई।

(मुसलमान)एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हैं और इस दीवार के पीछे यह आना नहीं चाहते जो अल्लाह तआला ने इस ज़माने में इस दरवाज़े को बंद करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के द्वारा से क़ायम फ़रमाई है। इसलिए यह फ़ित्ने बढ़ते चले जा रहे हैं।

अल्लाह तआला हमें भी महफ़ूज़ रखे कि हम अहमदी इस ढाल के पीछे रहें जो अल्लाह तआला ने इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम के द्वारा हमें मुहय्या फ़रमाई है और इस दीवार के पीछे रहें।

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मुर्ति बदरी सहाबी रसूल हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि की सीरत मुबारका का तज़किरा

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 अप्रैल 2019 . स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन बदरी सहाबी का मैं ज़िक्र करूँगा उनका नाम है हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि। उनकी कुनिय्यत अब्बू साइब थी। हज़रत उस्मान रज़ि की माता का नाम सुख़ैलह बिन्त अनबस था। हज़रत उस्मान रज़ि और आप के भाई हज़रत क़ुदअमह रज़ि शक्ल तथा सूरत में आपस में एक जैसे थे। आप का सम्बन्ध क़ुरैश मक्का के ख़ानदान बनू जुमह से था।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 305-306 उस्मान बिन मज़ऊन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि के इस्लाम स्वीकार करने की घटना इस तरह मिलती है। हज़रत इब्न अब्बास रज़ी अल्लाह तआला अन्हुमा से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में अपने घर के सेहन में तशरीफ़ फ़र्मा थे। वहां से उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि का गुज़र हुआ। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखकर मुस्कुराए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया क्या तुम बैठोगे नहीं? उन्होंने कहा क्यों नहीं। अतः वह आप के सामने आ के बैठ गए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे बात कर रहे थे कि अचानक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी निगाहें ऊपर को उठाएं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक लम्हे के लिए आसमान की तरफ़ देखा। फिर धीरे-धीरे अपनी निगाहें नीची करने लगे यहां तक कि आप ने ज़मीन पर अपने दाएं तरफ़ देखना शुरू कर दिया और अपने साथ बैठे हुए उस्मान से मुँह फेर कर दूसरी तरफ़ ध्यान देने लग गए और अपना सिर झुका लिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस दौरान में अपने सिर को यूं हिलाते रहे मानो किसी बात को समझ रहे हैं। उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि पास बैठे हुए थे,ये सब देख रहे थे। थोड़ी देर बाद जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस काम से फ़ारिग़ हुए या जो भी इस वक़्त अवस्था थी इस से फ़ारिग़ हुए और जो कुछ आप से कहा जा रहा था, जो बज़ाहिर लग रहा था कि कुछ कहा जा रहा है, हज़रत उस्मान रज़ि को तो नहीं पता था लेकिन बहरहाल आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा जा रहा था वह आप ने समझ लिया तो फिर आप की निगाहें आसमान की तरफ़ उठीं जैसे पहली बार हुआ था। आप की निगाहें किसी चीज़ का पीछा करती रहीं यहां तक कि वह चीज़ आसमान में ग़ायब हो गई। इस के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहले की तरह उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि की तरफ़ ध्यान दिया तो उस्मान रज़ि कहने लगे कि मैं किस मक़सद की ख़ातिर आप के पास आऊँ और बैठूँ? हज़रत उस्मान रज़ि ने कहा , आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ये सवाल किया कि आज आप ने जो कुछ किया है इस से पहले मैंने आप को ऐसा करते हुए नहीं देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम ने मुझे क्या करते हुए देखा है? उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि कहने लगे कि मैंने देखा कि आप की नज़रें आसमान की तरफ़ उठ गईं। फिर आप ने दाएं तरफ अपनी नज़रें जमा दें। आप मुझे छोड़कर इस तरफ़ मुतवज्जा हो गए। आप ने अपना सिर हिलाना शुरू कर दिया मानो जो कुछ आप से कहा जा रहा है उसे आप समझने की कोशिश कर रहे थे। आप ने फ़रमाया क्या वास्तव में तुम ने ऐसा महसूस किया है? उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि कहने लगे। जी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अभी अभी मेरे पास अल्लाह का फरिश्ता आया था, पैग़ाम ले के आया था जब तुम मेरे पास ही बैठे हुए थे। उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि ने कहा कि अल्लाह का फरिश्ता? सवाल किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। उस्मान रज़ि ने पूछा फिर उसने क्या कहा? आप ने फ़रमाया उसने कहा ये था कि

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ

अर्थात यक़ीनन अल्लाह अदल का और एहसान का और रिश्तेदारों पर की जाने वाली अता की तरह अता का हुक्म देता है और निर्लज्जता और नापसंदीदा बातों और बग़ावत से मना करता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम इबरत हासिल करो।

उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि कहते हैं कि यह वह वक़्त था जब मेरे दिल में ईमान ने अपनी जगह पक्की कर ली और मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत हो गई।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 1पृष्ठ 807 मस्नद अब्दुल्लाह बिन अब्बास हदीस नंबर 2921आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एलान नबुव्वत के बाद आरंम्भिक दौर का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि एक क़रीब ज़माना में अर्थात उस ज़माने के आरम्भ में तलहा रज़ि और ज़ुबेर रज़ि और उमर रज़ि और हमज़ह रज़ि और उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि इस किस्म के साथी आप को मिल गए जिन में से हर शख़्स आप का फ़िदाई था। हर शख़्स आप के पसीने की जगह अपना ख़ून बहाने के लिए तैयार था। इस में कोई शंका नहीं कि तेरह साल तक कष्ट भी आए, मुश्किलें भी आईं, तकलीफ़ें भी आप को बर्दाश्त करनी पड़ीं मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इतमीनान था कि इन मक्का वालों में से अक़ल वाले, समझ वाले, रुतबे वाले, तक़्वा वाले, नेकी वाले मुझे स्वीकार कर चुके हैं और अब मुसलमान एक ताक़त समझे जाते हैं। जब कोई शख़्स रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में कहता कि नऊज़ बिल्लाह वह पागल हैं तो उस के दूसरे साथी ही उसे कहते कि अगर वह पागल है तो अमुक शख़्स जो बड़ा समझदार और अक़्लमंद है उसे क्यों मानता है। यह एक ऐसा जवाब था जिसके जवाब में कोई शख़्स बोलने की ताक़त नहीं रखता था।

यूरोपियन लेखक रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ अपने सारे ज़ोर खर्च कर देते हैं, बहुत ख़िलाफ़ बोलते हैं और कई बार आप पर गंद उछालने से भी पीछे नहीं रहते। अब भी यही कुछ होता है। मगर जहां अबू बकर रज़ि का नाम आता है वह कहते हैं कि अब्बू बकर रज़ि बड़ा बेनफ़्स था। इस पर बाअज़ दूसरे यूरोपियन लेखक लिखते हैं कि जिस शख़्स को अबू बकर रज़ि ने मान लिया वो झूटा किस तरह हो गया? अगर तुम अबू बकर रज़ि की तारीफ़ कर रहे हो तो जिसको अबू बकर रज़ि ने माना वह भी यक़ीनन प्रशंसा योग्य है। अगर वह बेनफ़्स था, अबू बकर रज़ि अगर बेनफ़्स था तो उसने ऐसे लालची को क्यों माना और अगर वह वास्तव में बेनफ़्स था तो फिर स्वीकार करना पड़ेगा कि इस का आक़ा भी बेनफ़्स था। यह एक बहुत बड़ी दलील है जिसको रद्द करना आसान नहीं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के बारे में भी फिर उस को इस से जोड़ा है। आप फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के बारे में भी हम देखते हैं कि लोग आप को जाहिल कहते हैं मगर ख़ुदा तआला ने इस एतराज़ को रद्द करने के लिए ऐसे सामान कर दिए कि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल शुरू में ही आप पर ईमान ले आए। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी भी दावा से पहले आप की तारीफ़ करने वाले थे। फिर जब आप ने दुनिया में अपनी मामूरियत का ऐलान किया तो उस के बाद शिक्षा प्राप्त लोगों की एक जमाअत अल्लाह तआला ने ऐसी खड़ी कर दी जो फ़ौरन आप पर ईमान ले आई। ये शिक्षा प्राप्त लोग उल्मा में से भी थे, उमीरों में से भी थे, अँग्रेज़ी जानने वाले तबक़े में से भी थे। तो आप उस की समीक्षा करते हुए कहते हैं। रोब और दबदबा तीन चीज़ों से ही होता है या तो ईमान से होता है या इल्म से होता है या रुपए से होता है। अल्लाह तआला ने तीनों चीज़ें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में भी पैदा कर दीं।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 9 पृष्ठ 139-140)

और आप को भी ऐसे साथी शुरू में मुहय्या कर दिए जिनकी दूसरी दुनिया तारीफ़ करती थी बल्कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की हिक्मत का लोहा आज तक माना जाता है। ग़ैर अहमदी हुकमा भी आप के नुस्ख़े इस्तिमाल करते हैं और इस बारे में लिखते हैं तो बहरहाल आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानने वाले ऐसे लोग उस वक़्त अता हुए जो हर तबक़े के लोग थे और बड़े बड़े ख़ानदानों के लोग थे।

एक और जगह कुफ़्फ़ार मक्का की हसरतों और हसद का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि बयान फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसे ऐसे सामान पैदा किए कि कुफ़्फ़ार के दिल हर वक़्त जल कर आग होते रहते थे और उन्हें कुछ समझ नहीं आता था कि इस आग को बुझाने का हम क्या इंतिज़ाम करें। कोई बड़ा ख़ानदान ऐसा नहीं था जिसके लोग रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में ना आ चुके हूँ। हज़रत ज़ुबैर रज़ि एक बड़े ख़ानदान में से थे। हज़रत तलहा रज़ि एक बड़े ख़ानदान में से थे। हज़रत उमर रज़ि एक बड़े ख़ानदान में से थे। हज़रत उस्मान रज़ि एक बड़े ख़ानदान में से थे। इसी तरह हज़रत अमरो रज़ि बिन आस और ख़ालिद रज़ि बिन वलीद (जो बाद में मुसलमान हुए) मक्का के चोटी के ख़ानदानों में से थे। आस मुख़ालिफ़ थे मगर (अर्थात अमरो के वालिद) अमरो रजि मुसलमान हो गए। वलीद मुख़ालिफ़ थे मगर ख़ालिद रज़ि मुसलमान हो गए। आप लिखते हैं कि अत: हज़ारों लोग ऐसे थे जो इस्लाम के कट्टर दुश्मन थे मगर उनकी औलादों ने अपने आपको मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों में डाल दिया और मैदाने जंग में अपने बापों और रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ तलवारें चिल्लाऐं।

(तफ़सीर कबीर भाग 9 पृष्ठ 588)

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि की हिजरत हब्शा और वहां से मक्का वापसी का भी ज़िक्र आता है जैसा कि ज़िक्र हो चुका है कि हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि आरम्भिक इस्लाम क़बूल करने वालों में शामिल थे। इब्न इस्हाक़ के नज़दीक आप ने तेरह आदमियों के बाद इस्लाम क़बूल किया। आप ने और आपके बेटे साइब ने मुसलमानों की एक जमाअत के साथ हब्शा की तरफ़ पहली हिजरत भी की थी। हब्शा निवास के दौरान ही जब उन्हें ख़बर मिली कि क़ुरैश ईमान ले आए हैं। तब आप वापस मक्का आ गए थे। इब्न इस्हाक़ बयान करते हैं कि जब मुहाजरीन हब्शा को आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मक्का वालों के सजदा करने की ख़बर पहुंची तो ये लोग वहां से चल पड़े। इस की तफ़सील में पहले पिछले ख़ुबों में बयान कर चुका हूँ और उनके साथ और लोग भी थे कि सजदा की वजह क्या हुई थी? उनका यह ख़्याल था कि सब कुफ़्फ़ार ने आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी कर ली है। जब ये मक्का के क़रीब पहुंचे और असल घटना का पता लगा तो उस वक़्त उन्हें वापिस हब्शा जाना मुश्किल लग रहा था। कुछ दूसरी रिवायतों के अनुसार कुछ लोग वहीं से वापिस हब्शा चले भी गए थे। यह भी कहा जाता है कि और जो मक्के में भी बग़ैर किसी की पनाह में आने के दाख़िल होने से डर रहे थे वे चले गए थे। बहरहाल जो वहां आ गए थे यह कुछ देर वहीं रुके रहे यहां तक कि उनमें से हर एक अहले मक्का में से किसी ना किसी की अमान में दाख़िल हुआ। उन्होंने किसी ना किसी की अमान ले ली या रास्ते में कुछ देर रुके रहे जब तक अमान ना मिल गई। हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ी अल्लाह तआला अन्हो वलीद बिन मुग़ीरह की अमान में आए। इब्न इस्हाक़ बयान करते हैं कि जब हज़रत उस्मान रज़ि ने देखा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के असहाब रज़ि को तकालीफ़ पहुंच रही हैं, लोग उनको मार रहे हैं, उन पर ज़ुल्म कर रहे हैं और वह वलीद बिन मुग़ीरह की अमान में रात-दिन सुकून से गुज़ार रहे हैं। वलीद वहां कुफ़्फ़ार मक्का के रईसों का एक रईस था जो ग़ैर मुस्लिम था उस की अमान में आ गए थे। तो उस्मान रज़ि कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम! मेरी सुबह शाम एक मुशरिक की अमान में अमन के साथ गुज़र रही है जबकि मेरे दोस्तों और घर वालों को अल्लाह की राह में तकालीफ़ और कष्ट पहुंच रहे हैं। यक़ीनन मुझ में कोई ख़राबी है। उन्होंने अपने आप यह कहा। अत: आप वलीद बिन मुग़ीरह के पास गए और कहा कि ए अबू अबदशमस! (ये वलीद बिन मुग़ीरह का लक़ब था) तुम्हारा ज़िम्मा पूरा हो गया। मैं तुम्हारी अमान में था। अब मैं चाहता हूँ इस अमान से निकल कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाऊं क्योंकि मेरे लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाब ारज़ि में उस्वा है। वलीद ने कहा कि हे मेरे भतीजे! वलीद उनके वालिद के बड़े क़रीबी दोस्त थे। उन्होंने कहा हे मेरे भतीजे! शायद तुम्हें मेरे इस अमान की वजह से कोई तकलीफ़ पहुंची हो या बेइज़्ज़ती हुई है? तो आप कहने लगे कि नहीं लेकिन मैं अल्लाह की अमान से राज़ी हूँ। तुम्हारी अमान से निकलता हूँ और अल्लाह की अमान पर राज़ी हूँ और में इस के इलावा किसी और की पनाह का तलबगार नहीं हूँ। वलीद ने कहा कि ख़ाना काअबा के पास चलो और वहीं मेरी अमान ऐलान कर के वापस कर दो जैसा कि मैंने तुम्हें ऐलान कर के पनाह दी थी। हज़रत उस्मान रज़ि ने कहा चलें। फिर वे दोनों ख़ाना काअबा के पास गए। वलीद ने कहा यह उस्मान रज़ि है जो मुझे मेरी अमान वापस करने आया है, लोगों के सामने यह ऐलान किया। उस्मान रज़ि ने कहा यह सच कह रहा है। यक़ीनन मैंने उसे अर्थात इस अमान देने वाले वलीद को वादा का सच्चा और अमान के लिहाज़ से माज़ज़ पाया है मगर अब मैं अल्लाह के सिवा किसी और की अमान में नहीं रहना चाहता । इसलिए मैंने वलीद की अमान को

उसे वापस कर दिया है। इस के बाद हज़रत उस्मान रज़ि लौट गए।

(असदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 589-590 उस्मान बिन मज़ऊन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

इस हजरत हब्शा का ज़िक्र पहले भी विभिन्न सहाबा के ज़िक्र में होता रहा है। मुख़्तसर बयान कर देता हूँ। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि ने भी इस को तारीख़ के विभिन्न हवालों से लिखा है कि जब मुसलमानों की तकालीफ़ चरम को पहुंच गईं और क़ुरैश अपने ईकष्ट पहुंचाने में तरक़्क़ी करते गए तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों से फ़रमाया कि वे हब्शा की तरफ़ हिजरत कर जाएं और फ़रमाया कि हब्शा का बादशाह आदिल और इंसाफ़ को पसन्द करने वाला है। इस की हुकूमत में किसी पर ज़ुल्म नहीं होता। हब्शा का देश जो एथोपीया या अबीसीनिया कहलाता है अफ्रीक़ा महाद्वीप के उत्तर पूर्व में स्थित है और जाये वक़ूअ के लिहाज़ से दक्षिण अरब के बिलकुल सामने है और बीच में अह्मर समुन्द्र के सिवा कोई और देश नहीं। इस ज़माना में हब्शा में एक मज़बूत ईसाई हुकूमत क़ायम थी और वहां का बादशाह नज्जाशी कहलाता था बल्कि अब तक भी वहां का हुकमरान इसी नाम से पुकारा जाता है। (जब उन्होंने ये लिखा था) हब्शा के साथ अरब के तिजारती सम्बन्ध थे। इस वक़्त के नज्जाशी का व्यक्तिगत नाम असहमा था जो एक न्याय करने वाला , बड़ा इन्साफ़ करने वाला , चौकन्ना और मज़बूत बादशाह था। बहरहाल जब मुसलमानों की तकलीफ़ें चरम को पहुंच गईं तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन से इरशाद फ़रमाया कि जिन जिन से संभव हो हब्शा की तरफ़ हिजरत कर जाएं। अत: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमाने पर रजब महीने में पाँच नबवी में नबुव्वत के दावे के पाँच साल के बाद ग्यारह मर्द और चार औरतों ने हब्शा की तरफ़ हिजरत की। उनमें से ज़्यादा प्रसिद्ध नाम ये हैं। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि और उनकी पत्नी रज़ि बिन्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम , अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि, ज़ुबैर इब्न अल्अवाम, अबू हज़ीफ़ह रज़ि बिन अतबा, उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि, मसअब बिन उमैर रज़ि और अबू सलमह रज़ि बिन अब्दुल असद और उनकी पत्नी सलमह रज़ि। अब यह लिखते हैं कि यह एक अजीब बात है कि इन आरंम्भिक मुहाजिरीन में अधिक संख्या उन लोगों की थी जो क़ुरैश के ताक़तवर क़बीलों से सम्बन्ध रखते थे और कमज़ोर लोग कम-नज़र आते हैं जिन से दो बातों का पता चलता है कि प्रथम यह कि ताक़तवर क़बीलों से सम्बन्ध रखने वाले लोग भी क़ुरैश के अत्याचारों से महफ़ूज़ नहीं थे। दूसरे यह कि कमज़ोर लोग जैसे ग़ुलाम इत्यादि उस वक़्त ऐसी कमज़ोरी और बेबसी की हालत में थे कि हिजरत की भी ताक़त नहीं रखते थे।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 146 , 147)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने अपने अंदाज़ में इस घटना को इस तरह बयान फ़रमाया है। आप हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि की मक्का में पनाह और फिर लबीद बिन रबीया वाली घटना का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं। यह पहले ज़िक्र हो चुका है कि आपने वलीद की अमान वापस कर दी थी। अब लिखते हैं कि जब मक्का वालों का ज़ुलम चरम को पहुंच गया तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दिन अपने साथियों को बुलवाया और फ़रमाया। पश्चिम की तरफ़ समुंद्र पार एक ज़मीन है जहां ख़ुदा की इबादत की वजह से ज़ुल्म नहीं किया जाता। मज़हब की तबदीली की वजह से लोगों को क़तल नहीं किया जाता। वहां एक न्याय करने वाला बादशाह है। तुम लोग हिजरत कर के वहां चले जाओ शायद तुम्हारे लिए आसानी की राह पैदा हो जाए। कुछ मुसलमान मर्द और औरतें और बच्चे आप के इस उपदेश पर अबीसीनिया की तरफ़ चले गए। इन लोगों का मक्का से निकलना कोई मामूली बात नहीं थी। यहां ये बड़ा जज़बाती पहलू है कि अपने मुल्क को छोड़ना। यह कोई मामूली बात नहीं थी। मक्का के लोग अपने आपको ख़ाना काबा का मुतवल्ली समझते थे और मक्का से बाहर चले जाना उनके लिए एक असहनीय सदमा था। वही शख़्स यह बात कह सकता था जिसके लिए दुनिया में कोई और ठिकाना बाक़ी ना रहे कि मक्का से निकल जाऊं। अत: उन लोगों का निकलना एक निहायत ही दर्दनाक घटना थी और फिर निकलना भी उन लोगों को चोरी चोरी पड़ा। छुप के निकलना पड़ा क्योंकि वे जानते थे कि अगर मक्का वालों को मालूम हो गया तो वे हमें निकलने नहीं देंगे और इस वजह से वे अपने अज़ीज़ों और प्यारों की आख़िरी मुलाक़ात से भी महरूम जा रहे थे। उन को यह भी मौक़ा नहीं मिला कि वे अज़ीज़ों और प्यारों से मुलाक़ात कर के जाएं, छुप के निकले थे। उनके दिलों की जो हालत थी वह थी। उनके देखने वाले भी उनकी तकलीफ़ से प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रह सके। वे ग़ैर जिन को पता लगा कि इस तरह हिजरत कर रहे हैं वे भी उनकी इस हालत से प्रभावित हो रहे थे। अत: जिस वक़्त यह क़ाफ़िला निकल रहा था हज़रत अमर रज़ि जो उस वक़्त तक काफ़िर और इस्लाम के कट्टर दुश्मन थे और मुसलमानों को तकलीफ़ देने वालों में से चोटी के आदमी थे संयोग से इस क़ाफ़िले के कुछ लोगों को मिल गए। उन में एक सहाबिया उम्मे अब्दुल्लाह नामी भी थीं। बंधे हुए सामान और तैयार सवारियों को जब आप ने, हज़रत उमर रज़ि ने देखा तो आप समझ गए कि ये लोग मक्का छोड़कर जा रहे हैं। आप ने कहा उम्मे अब्दुल्लाह रज़ि! यह तो हिजरत के सामान नज़र आ रहे हैं। उम्मे अब्दुल्लाह रहती हैं मैंने जवाब में कहा हाँ ख़ुदा की क़सम ! हम किसी और मुल्क में चले जाऐंगे क्योंकि तुमने हमको बहुत दुख दिए हैं और हम पर बहुत ज़ुल्म किए हैं। हम उस वक़्त तक अपने मुल्क में नहीं लूटेंगे जब तक ख़ुदा तआला हमारे लिए कोई आसानी और आराम की सूरत ना पैदा कर दे। उम्मे अब्दुल्लाह बयान करती हैं कि उमर रज़ि ने जवाब मैं कहा कि अच्छा। ख़ुदा तुम्हारे साथ हो। और कहती हैं कि मैंने उनकी आवाज़ में दर्द महसूस किया हालाँकि उस वक़्त मुसलमानों के मुख़ालिफ़ थे लेकिन यह हिजरत देखकर बड़े जज़बाती हो गए। ख़ुदा तुम्हारे साथ हो कहा तो इस आवाज़ में एक दर्द था जो इस से पहले मैंने कभी महसूस नहीं की थी। फिर वह अथात हज़रत उमर रज़ि जल्दी से मुँह फेर के वहां से चले गए और मैंने महसूस किया कि इस घटना से उनकी तबीयत निहायत ही दुखी हो गई है।

बहरहाल जब उन लोगों के हिजरत करने की मक्का वालों को ख़बर हुई तो उन्होंने उनका पीछा किया और समुंद्र तक उनके पीछे गए मगर यह क़ाफ़िला उन लोगों के समुंद्र तक पहुंचने से पहले ही हब्शा की तरफ़ रवाना हो चुका था। मक्का वालों को यह मालूम हुआ तो उन्होंने यह फ़ैसला किया कि एक वफ़द बादशाह हब्शा के पास भेजा जाए जो उसे मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काए और उसे तहरीक करे कि वह मुसलमानों को मक्का वालों के सपुर्द कर दे। बहरहाल यह वफ़द हब्शा गया और बादशाह से मिला। दरबार के अमीरों को भी उन लोगों ने ख़ूब उकसाया। लेकिन अल्लाह तआला ने बादशाह हब्शा के दिल को मज़बूत कर दिया था और उसने बावजूद उन लोगों के बार बार कहने के और बावजूद दरबारियों के इसरार के, दरबारी जो थे वे मक्का वालों की बातों में आ गए थे उन्होंने भी बादशाह को बड़ा कहा कि उनको मक्का वालों के, काफ़िरों के सपुर्द कर दो। उसने मुसलमानों को कुफ़्फ़ार के सपुर्द करने से इनकार कर दिया। जब यह वफ़द नाकाम वापस आया तब मक्का वालों ने इन मुसलमानों को बुलाने के लिए एक और तरीका सोचा और वह यह कि हब्शा जाने वाले कुछ क़ाफ़िलों में यह ख़बर मशहूर कर दी कि मक्का के सब लोग मुसलमान हो गए हैं। जब यह ख़बर हब्शा पहुंची तो अक्सर मुसलमान ख़ुशी से मक्का की तरफ़ वापस लौटे मगर मक्का पहुंच कर उनको मालूम हुआ कि यह ख़बर केवल शरारत से मशहूर की गई है और इस में कोई हक़ीक़त नहीं है। इस पर कुछ लोग तो वापस हब्शा चले गए जैसा कि ज़िक्र हो चुका है और कुछ मक्का में ठहर गए। इन ठहरने वालों में से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि भी थे जो मक्का के एक बहुत बड़े रईस के बेटे थे। इस बार उनके बाप के एक दोस्त वलीद बिन मुग़ीरह ने उनको पनाह दी और वह अमन से मक्का में रहने लगे मगर इस अर्से में उन्होंने देखा कि कुछ दूसरे मुसलमानों को दुख दिए जाते हैं और उन्हें सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें पहुंचाई जाती हैं। चूँकि वह ग़ैरत मंद नौजवान थे। वलीद के पास गए और उसे कह दिया कि मैं आपकी पनाह को वापस करता हूँ क्योंकि मुझसे ये नहीं देखा जाता कि दूसरे मुसलमान दुख उठाएं और मैं आराम से रहूं। अत: वलीद ने ऐलान कर दिया कि उस्मान रज़ि अब मेरी पनाह में नहीं।

इस के बाद एक दिन लबीद ,अरब का एक मशहूर शायर था मक्का के रईसों में बैठा अपने शेअर सुना रहा था कि उसने एक मिसरा पढ़ा

وَكُلُّ نَعِيْمٍ لَا مَحَالَةَ زَائِلٌ

जिसके यह अर्थ हैं कि हर नेअमत आख़िर मिट जाने वाली है। उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि ने कहा कि यह ग़लत है जन्नत की नेअमतें हमेशा क़ायम रहेंगी। लबीद एक बहुत बड़ा आदमी था। यह जवाब सुनकर जोश में आ गया और उसने कहा कि हे क़ुरैश के लोगो! तुम्हारे मेहमान को तो पहले इस तरह ज़लील नहीं

किया जाता था अब यह नया रिवाज कब से शुरू हुआ है? इस पर एक शख़्स ने कहा यह एक बेवक़ूफ़ आदमी है इस की बात की पर्वा नहीं करें। हज़रत उस्मान रज़ि ने अपनी बात पर इसरार किया और कहा कि बेवक़ूफ़ी की क्या बात है जो बात मैंने कही है वह सच है। इस पर एक शख़्स ने उठकर ज़ोर से आपके मुँह पर घूँसा मारा, मुक्का मारा जिससे आप की एक आँख निकल गई या सूज गई। वलीद उस वक़्त इस मजलिस में बैठा हुआ था जिसने आप को पनाह दी थी। उनके वालिद का दोस्त, उस्मान रज़ि के बाप के साथ उस की बड़ी गहिरी दोस्ती थी। उस्मान रज़ि के वालिद फ़ौत हो गए थे तो अपने मुर्दा दोस्त के बेटे की यह हालत इस से देखी ना गई मगर मक्का के रिवाज के मुताबिक़ जब उस्मान रज़ि उस की पनाह में नहीं थे तो वो उनकी हिमायत भी नहीं कर सकता था इसलिए और तो कुछ ना कर सका निहायत ही दुख के साथ उस्मान रज़ि ही को मुख़ातिब कर के बोला कि ए मेरे भाई के बेटे! ख़ुदा की क़सम तेरी ये आँख उस सदमा से बच सकती थी जबकि तो एक ज़बरदस्त हिफ़ाज़त में था (यानी मेरी पनाह वलीद की पनाह में था) लेकिन तू ने ख़ुद ही अपनी पनाह को छोड़ दिया और यह दिन देखा। उस्मान रज़ि ने जवाब दिया कि जो कुछ मेरे साथ हुआ है मैं ख़ुद उस का इच्छुक था। तुम मेरी फूटी हुई आँख पर मातम कर रहे हो हालाँकि मेरी तन्दरुस्त आँख इस बात के लिए तड़प रही है कि जो मेरी बहन के साथ हुआ है वही मेरे साथ क्यों नहीं होता। लिखते हैं कि उन्होंने कहा, उस्मान रज़ि ने वलीद को ये जवाब दिया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नमूना मेरे लिए बस है। बहुत काफ़ी है। अगर वह तकलीफ़ें उठा रहे हैं तो मैं क्यों ना उठाऊं। मेरे लिए ख़ुदा की हिमायत काफ़ी है।

(उद्धरित दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 202 से 205)

उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि और लबीद बिन रबीया की यह जो घटना है जो अरब का मशहूर शायर था उस का इस तरह भी तारीख़ों में ज़िक्र मिलता है वह भी बता देता हूँ। ये अरब का मशहूर शायर था। क़ुरैश की मज्लिस में बैठा था जैसा कि ज़िक्र हो चुका है। हज़रत उस्मान रज़ि भी इस के पास बैठ गए। लबीद ने पहले उस का यह एक मिसरा पढ़ा कि

اَلَا كُلُّ شَيْءٍ مَّا خَلَا اللّٰهَ بَاطِلٌ

ख़बरदार! अल्लाह के सिवा सब कुछ बातिल है। इस पर हज़रत उस्मान रज़ि कहने लगे कि तो ने सच कहा है। फिर लबीद ने कहा

وَكُلُّ نَعِيْمٍ لَا مَحَالَةَ زَائِلٌ

कि बेशक हर नेअमत ज़वाल होने वाली है। हज़रत उस्मान रज़ि ने कहा तो ने झूठ कहा। लोगों ने आपकी तरफ़ देखा और लबीद से कहा कि दोबारा पढ़ो जिस पर लबीद ने दोबारा पढ़ा। हज़रत उस्मान रज़ि ने इसी तरह एक बार तसदीक़ और एक दफ़ा झुठला दिया कि जन्नत की नेअमतों को ज़वाल नहीं है। लबीद यह जो शायर थे कहने लगे कि हे गिरोह क़ुरैश! तुम्हारी महफ़िलें ऐसी तो ना थीं। उन में से एक बेफकूफ खड़ा हुआ और उसने हज़रत उस्मान रज़ि की आँख पर थप्पड़ मार दिया या मुक्का मार दिया जिस से आपकी आँख नीली हो गई या सूज गई। आप के गर्द मौजूद लोगों ने कहा उस्मान रज़ि! ख़ुदा की क़सम! तुम एक मज़बूत पनाह में थे और तुम्हारी आँख इस तरह की तकलीफ़ से महफ़ूज़ थी जो तुम्हें अभी पहुंची है। इस पर उस्मान रज़ि ने कहा कि अल्लाह की अमान ज़्यादा महफ़ूज़ है और ज़्यादा सम्माननीय है और मेरी दूसरी आँख भी इसी तरह की मुसीबत की इच्छुक है जो इस आँख को पहुंची है। मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के साथ ईमान लाने वालों की पैरवी लाज़िम है। वलीद ने कहा कि मेरी अमान मैं तुम्हें क्या नुक़्सान था? इस पर हज़रत उस्मान रज़ि ने कहा कि मुझे अल्लाह की अमान के सिवा किसी अमान की ज़रूरत नहीं।

(असदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 590 उस्मान बिन मज़ऊन प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

ये थी उन लोगों के ईमान की कैफ़ीयत और यह था एक दर्द अपने साथियों के लिए भी कि अगर वे तकलीफ़ में हैं तो हम क्यों (बचे) रहें बल्कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जो सम्बन्ध था वह तो था ही मुहब्बत का कि वह तकलीफ़ में हैं तो मैं क्यों बच्चों। सहाबा रज़ि के नमूने देख के भी उनको बड़ी तकलीफ़ पहुँचती थी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि का इस तरह जवाब देना इसलिए था कि उन्होंने क़ुरआन करीम सुना हुआ था, इस्लामी तालीम सुनी हुई थी, क़ुरआन करीम पढ़ा हुआ था और अब उनके नज़दीक शेरों की कुछ हक़ीक़त ही नहीं थी बल्कि ख़ुद बाद में लबीद भी मुसलमान हो गया तो आप लिखते हैं कि ख़ुद लबीद ने मुसलमान होने पर यही तरीक़ा धारण किया था। अत: हज़रत उमर रज़ि ने एक बार अपने एक गवर्नर को कहला भेजा कि मुझे कुछ मशहूर शायरों का ताज़ा कलाम भेजो। जब लबीद जो उस वक़्त मुसलमान हो गए थे उन से ख़ाहिश का इज़हार किया गया तो उन्होंने क़ुरआन करीम की कुछ आयतें लिख कर भेज दीं।

हज़रत उस्मान रज़ि से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का और आप का जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सम्बन्ध और प्यार था उस का इज़हार इस एक घटना से होता है। रिवायत में आता है कि उनके फ़ौत होने पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें चुम्बन दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखों से इस वक़्त आँसू जारी थे। जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साहिबज़ादा इब्राहीम फ़ौत हुआ तो आप ने इस वक़्त भी इस की लाश पर फ़रमाया।

اَلْحِقْ بِسَلَفِنَا الصَّالِحِ عُثْمَانَ ابْنَ مَظْعُوْنَ

अर्थात हमारे सालिह अज़ीज़ उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि की सोहबत में जा।

(उद्धरित फ़ज़ाइलुल क़ुरआन नम्बर 4, अनवार उल-उलूम भाग 12 पृष्ठ 456)

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि की मदीना हिजरत की घटना इस तरह मिलती है कि हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि और हज़रत क़ुदअमह बिन मज़ऊन रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन रज़ि और हज़रत साइब बिन उस्मान रज़ि ने हजरत मदीना के वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा अजलानी रज़ि के घर क़ियाम किया था। एक दूसरे कथन के अनुसार ये सब लोग हज़रत हिज़ाम बिन वद्रीअह रज़ि के यहाँ ठहरे थे। मुहम्मद बिन उम्र वाक़दी बयान करते हैं कि आले मज़ऊन उन लोगों में से थे जिनके मर्द और औरतें सब के सब जमा हो कर हिजरत के लिए रवाना हुए थे और उनमें से कोई मक्का में बाक़ी नहीं रहा। हज़रत उम्मे अला बयान करती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुहाजरीन मदीना में आए तो अन्सार की इच्छा थी कि उनके घरों में रुकें। इस पर उनके लिए क़ुरआ डाला गया तो हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि हमारे हिस्से में आए। आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि और हज़रत अबू हीसम बिन तहयान के बीच भाईचारा का रिश्ता क़ायम फ़रमाया।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 302-303 उस्मान बिन मज़ऊन वमन बनी जमाह बिन अमरो दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत उस्मान रज़ि ने मदीना की तरफ़ हिजरत की और जंग बदर में भी शामिल हुए। आप सारे लोगों से ज़्यादा जोश के साथ इबादात बजा लाते थे। दिन को रोज़ा रखते थे और रात को इबादत किया करते थे। तामसिक इच्छाओं से बच कर रहते थे और औरतों से दूर रहने की कोशिश करते। आप ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दुनिया तर्क करने और ख़ुद को नपुंसक कर देने

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

की इजाज़त मांगी मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने से मना फ़रमाया। यह तारीख़ की किताब असदुल ग़ाबह में लिखा है।

(असदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 590 उस्मान बिन मज़ऊन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर यह रिवायत है कि एक दिन हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि की पत्नि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस्लम की पत्नियों के पास आईं। अज़्वाज मुतह्हरात ने उन्हें बिघरी हुई हालत में ,मैले कपड़े, बाल बिखरे हुए देखकर फ़रमाया कि तुम ने ऐसी हालत क्यों बना रखी है? अपने आपको सँवार कर रखा करो। तुम्हारे पति से अधिक दौलतमंद तो क़ुरैश में कोई नहीं है। यह नहीं है कि तुम afford नहीं कर सकती। तुम्हारा पति बड़ा अमीर आदमी है। अपनी हालत तो ठीक रखो। तो आप की, हज़रत उस्मान रज़ि की बीवी अज़्वाज-ए-मुतह्हरात को कहने लगीं जो सारी इकट्ठी बैठी हुई थीं कि हमारे लिए उनमें से कुछ नहीं है अर्थात जो कुछ आप कहती हैं ना उस्मान के पास दौलत या वह कुछ नहीं। क्यों? क्योंकि वह उस के जज़बात हमारे लिए कुछ नहीं हैं। वह रात को भी इबादत करते रहते हैं। अल्लाह तआला की इबादत में लगे रहते हैं। हमारी तरफ़ ध्यान नहीं देते। दिन को रोज़े रखते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो अज़्वाज ने आप को बताया। उस्मान रज़ि की बीवी की यह बात सुन कर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उस्मान रज़ि से मिले और फ़रमाया क्या तुम्हारे लिए मेरी ज़ात में उस्वा नहीं है? वह अर्ज़ करने लगे कि मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हूँ । क्या बात हो गई ?हज़रत उस्मान रज़ि ने कहा कि मैं तो कोशिश करता हूँ कि बिलकुल आप के अनुसार चलूं। तो इस पर आप ने ,आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम दिन-भर रोज़े रखते हो और रात-भर इबादत करते हो। उन्होंने अर्ज़ की जी हाँ में ऐसा ही करता हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐसा मत करो। तुम्हारी आँखों का तुम पर हक़ है। तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारे घर वालों का भी तुम पर हक़ है। तुम्हारे बीवी बच्चों का तुम पर हक़ है। अत: नमाज़ पढ़ो और सोऊ भी। सोना भी ज़रूरी है। नफ़ल पढ़ो, रातों को जागो लेकिन सोना भी ज़रूरी है। रोज़ा रखो और छोड़ो भी। अगर नफ़ली रोज़े रखने हैं तो बेशक रखो लेकिन कुछ दिन छोड़ भी देने चाहिऐं। यह बात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ि से फ़रमाई तो कुछ अरसा के बाद उनकी बीवी अज़्वाज-ए-मुतह्हरात के पास दुबारा आईं तो उन्होंने ख़ुशबू लगाई हुई थी मानो कि वह दुल्हन हूँ। उन्होंने कहा क्या बात है आज बड़ी सजी बनी हो। इस पर वह कहने लगीं कि हमें भी वह चीज़ हासिल हो गई है जो लोगों को उपलब्ध है अर्थात कि अब पति भी ध्यान देता है।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 302 उस्मान बिन मज़ऊन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत आयशा रज़ि से इस बारे में रिवायत है। आप फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि को बुलाया और फ़रमाया किया तू मेरे तरीक़े को नापसंद करता है? वह बोले या रसूलुल्लाह!नहीं मैं आप ही के तरीक़े को तलाश करता हूँ। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं सोता भी हूँ और नमाज़ भी पढ़ता हूँ। रोज़ा भी रखता हूँ और कभी नहीं भी रखता। और औरतों से निकाह भी करता हूँ। हे उस्मान! तो अल्लाह से डर तुझ पर तेरी बीवी का हक़ है। तेरे मेहमान का हक़ है और ख़ुद तेरे नफ़स का भी तुझ पर हक़ है। अत: कभी कभी रोज़ा भी रखो और कभी ना रखो। नमाज़ भी पढ़ो और सोया भी करो। (सुनन अबी दाऊद 1369)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहबओ ने बुख़ारी के हवाले से बयान फ़रमाया है कि साद बिन अबी वक़ास रज़ि रिवायत करते हैं कि उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से औरतों से बिलकुल ही अलग हो जाने की इजाज़त चाही मगर आप ने इस की इजाज़त नहीं दी और अगर आप इजाज़त दे देते तो हम लोग तैयार थे कि अपने आपको मानो बिलकुल नपुंसक ही कर लेते।

(सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ418)

इन भावनाओं को बिलकुल ख़त्म करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करते।

बुख़ारी की जो हदीस है इस का अनुवाद बता देता हूँ। वह इस तरह है हज़रत साद बिन अबी वक़ास रज़ि बयान करते हैं कि हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि ने तबत्तुल (संसार को त्यागने) की इजाज़त आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मांगी थी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से इन्कार कर दिया था। और सही बुख़ारी की किताबुन निकाह की यह हदीस है और फिर यहां यह भी इसी तरह लिखा है, जो बयान हो चुका है कि अगर आप उस की इजाज़त दे देते तो हम सब शायद दुनिया से विरक्त हो जाते।

(सही अल्बुख़ारी किताबुन्निकाह हदीस 5073)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि फिर मज़ीद लिखते हैं कि उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि थे जो बनू जुमह में से थे। निहायत सूफ़ी मिज़ाज आदमी थे। उन्होंने ज़माना जाहलियत में ही शराब तर्क कर रखी थी। इस्लाम लाने से पहले भी कभी शराब नहीं पीते थे,और इस्लाम में भी दुनिया से विरक्त होना चाहते थे मगर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाते हुए कि इस्लाम में रहबानियत जायज़ नहीं है। इस की इजाज़त नहीं दी।

(सीरत ख़ातमुल्अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 124)

इस्लाम कहता है कि इस दुनिया में रहो। इस दुनिया की जो नेअमतें हैं। अल्लाह तआला ने जो नेअमतें पैदा की हैं उनसे फ़ायदा उठाओ लेकिन अल्लाह तआला को ना भूलो। वह हमेशा तुम्हारे सामने रहना चाहिए।

हज़रत क़ुदामह बिन मज़ऊन रज़ि से रिवायत है कि हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि ने हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि को पाया। वह अपनी सवारी के ऊपर थे और हज़रत उस्मान रज़ि अपनी सवारी के ऊपर थे। असायह नामी घाटी पर इन दोनों की मुलाक़ात हुई। असायह, ज़ुलुहुलैफ़ह के बाद जुह्फ़ह के रास्ते में मदीना से सतत्तर (77)मील की दूरी पर है। यह उस की लोकेशन (Location)बताई गई है बहरहाल हज़रत उमर रज़ि की ऊंटनी ने हज़रत उस्मान रज़ि की ऊंटनी को भेंच दिया,ज़रा दबाया। ज़्यादा क़रीब हो गए तो ऊंटनी ने दबा दिया। रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी क़ाफ़िला के काफ़ी आगे थी। हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि ने कहा يَاغُلَقَ الْفِتْنَةِ (या ग़ुलक़ल फ़ितुनत) आपने मुझे तकलीफ़ दी है। जब सवारियां रुकीं तो हज़रत उम्र बिन ख़ताब रज़ि क़रीब आए और कहा हे अब्बू साइब! अर्थात उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि को कहा कि अल्लाह तआला तुम्हारी मग़फ़िरत करे वह कौन सा नाम था जिस के साथ तुमने मुझे पुकारा था। यह कह कर पुकारा था ग़ुलक़ल फ़ितुनत तो उन्होंने कहा नहीं अल्लाह की क़सम! आप का वह नाम मैंने नहीं रखा। जिस नाम से मैंने पुकारा था वह मैंने नहीं कहा था। बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप का वह नाम रखा था। फिर कहने लगे कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ाफ़िले के आगे हैं और इस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आगे चल रहे थे। इस के बाद हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि ने उन्हें बताया कि आगे हैं आप पूछ भी सकते हैं। फिर बयान की तफ़सील यह है कि एक बार आप हमारे पास से गुज़रे अर्थात हज़रत उमर रज़ि हमारे पास से गुज़रे जबकि हम रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बैठे हुए थे और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह आदमी غَلَقَ الْفِتْنَة अर्थात फ़ित्ने की राह में रोक है। यह कहते हुए आप ने अपने हाथ से इशारा किया कि तुम्हारे और फ़ित्ने के दरमयान एक दरवाज़ा होगा जो बहुत ज़्यादा सख़्ती से बंद रहेगा जब तक यह शख़्स तुम्हारे बीच ज़िन्दा रहेगा।(अल्माजमुल कबीर लित्तिबरानी भाग 9 पृष्ठ 38-39 बाब म असनद उस्मान बिन मज़ऊन हदीस 8321, दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 2002 ई)(फरहंग-ए-सीरत लेखक सय्यद फ़ज़लुर्रहमान पृष्ठ 29 ज़व्वार एकेडेमी पब्लीकीशनज़ कराची 2003 ई)अर्थात जब तक हज़रत उमर रज़ि की ज़िंदगी है कोई फ़ित्ना इस्लाम में नहीं आएगा और तारीख़ भी यही बताती है। इस के बाद ही ज़्यादा फ़ित्ने शुरू हुए।

इस जगह जो हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि ने हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि के बारे में ग़ुलक़ल फ़ितुनत के यह अलफ़ाज़ बयान किए हैं इस की तफ़सील बयान करता हूँ। हज़रत हुज़ीफ़ह रज़ि बयान करते हैं कि हम हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के पास बैठे हुए थे तो उन्होंने कहा कि तुम में से कौन फ़ित्ने के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात याद रखता है तो मैंने कहा कि मैं। वैसे ही जैसे कि आप ने फ़रमाया था। इसी तरह याद रखता हूँ जिस तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था। तो हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि तुम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर या कहा रिवायत करने पर बहुत ही दिलेर हो। अर्थात बड़ा यक़ीन है तुम्हें और तुम यह बड़ी जुर्रत से काम

ले रहे हो। मैंने कहा कि आदमी को इबतिला उस की बीवी और इस के माल और इस की औलाद और इस के पड़ोसी की वजह से आता है। ये भी फ़ित्ने हैं। नमाज़, रोज़ा, सदक़ा और नेकियों का हुक्म और बदियों से रोकना इस इबतिला को दूर कर देते हैं। हज़रत उमर रज़ि ने कहा मेरी मुराद इस से नहीं है। यह औलाद की, दौलत की सारी चीज़ें हैं, फ़ित्ने हैं जिनको तुम नमाज़ें पढ़ के, रोज़ा रख के, सदक़ा देकर और कई नेकियां कर के दूर कर सकते हो। हज़रत उमर रज़ि ने कहा मेरी मुराद यह नहीं है बल्कि इस फ़ित्ने से है जो इस तरह मौजें लेगा जिस तरह समुंद्र। बहुत शदीद किस्म का फ़ित्ना है जो उम्मत में आएगा। हज़रत हुज़ीफ़ह रज़ि ने कहा कि अमीरुल मोमेनीन! आप को इस से कोई ख़तरा नहीं है। वह जो फ़ित्ना पैदा होना है इस से आप को कोई ख़तरा नहीं। आप की ज़िन्दगी तक कोई नहीं है क्योंकि आप के और इस के बीच एक बंद किया हुआ दरवाज़ा है। हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि क्या वह तोड़ा जाएगा या खोला जाएगा ? उन्होंने वही बयान किया, अर्ज़ किया जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि उनके मध्य एक बंद दरवाज़ा है। तो हज़रत उमर रज़ि ने इस पर उनसे पूछा क्या वह दरवाज़ा तोड़ा जाएगा या खोला जाएगा। तो उन्होंने कहा कि तोड़ा जाएगा। ऐसा दरवाज़ा है जो तोड़ा जाएगा। तो हज़रत उमर रज़ि ने कहा तब तो कभी भी बन्द नहीं होगा। अगर दरवाज़ा खोला जाए तो बंद करने के संभावना होती है लेकिन अगर तोड़ा जाए तो फिर उस को बंद करना बहुत मुश्किल काम है। हज़रत उमर रज़ि ने इस बात पर कहा फिर तो ये कभी बंद नहीं होगा । अर्थात जो फ़ित्ने हैं वे चलते चले जाऐंगे अगर एक बार शुरू हुए। और हम देखते हैं कि ये फ़ित्ने मुसलमान उम्मत में बढ़ते चले गए। एक के बाद दूसरा फ़ित्ना पैदा होता चला गया। हज़रत उस्मान रज़ि के ज़माने में, हज़रत अली रज़ि के ज़मानै में, फिर बाद के ज़मानों में और अब तक यही फ़ित्ने हैं जो मुसलमानों में जारी हैं। एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हैं और इस दीवार के पीछे यह आना नहीं चाहते जो अल्लाह तआला ने इस ज़माने में इस दरवाज़े को बंद करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के द्वारा से क़ायम फ़रमाई है। इसलिए यह फ़ित्ने बढ़ते चले जा रहे हैं। अल्लाह तआला हमें भी महफ़ूज़ रखे कि हम अहमदी इस ढाल के पीछे रहीं जो अल्लाह तआला ने इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा हमें मुहय्या फ़रमाई है और इस दीवार के पीछे रहीं। तो बहरहाल ये बातें हो रही थीं। हज़रत उमर रज़ि ने कहा ये फ़ित्ना तो फिर कभी बंद नहीं होगा। तो हमने उनसे कहा , उन लोगों ने जो साथ बैठे हुए थे रिवायत करने वाले से, हज़रत हुज़ीफ़ह रज़ि से पूछा। क्या हज़रत उमर रजि इस दरवाज़े को जानते थे? हज़रत हुज़ीफ़ह रज़ि ने कहा हाँ। वह उसे ऐसे ही जानते थे जैसे ये कि कल से पहले रात है अर्थात बिलकुल यक़ीनी बात थी। हज़रत उमर रज़ि को पता था कि मेरे बाद फिर फ़ित्ने पैदा हो जाऐंगे।

(सही अल्बुख़ारी किताबुल मवाक़ीयत हदीस 525)

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि पहले मुहाजिर थे जिन्होंने मदीने में वफ़ात पाई। आप दो हिज्री में फ़ौत हुए। कुछ के नज़दीक आप की वफ़ात जंग बदर के 22 माह के बाद हुई और आप जन्नतुल बक़ी में दफ़न होने वाले पहले आदमी थे।

(असदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 591 उस्मान बिन मज़ऊन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

बहरहाल उनके हवाले से कुछ और बातें भी हैं जो इंशा अल्लाह आगे वर्णन करूँगा।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

पृष्ठ 2 का शेष

in Sciences & Mathematics

अर्सा जमील साहिबा पुत्री आदरणीय जमील अहमद साहिब A Levels in Morden Languages and Sciences

नूरुल काइनात साद साहिबा पुत्री आदरणीय उवैस बिन साद साहिब A Levels in Human Science

बारिया इक़बाल साहिबा पुत्री आदरणीय परवेज़ इक़बाल साहिब A Levels in Technology Sciences

रूबीना मर्यम नसीम साहिबा पुत्री आदरणीय नसीर अहमद साहिब A Levels in General Sciences

आयशा अहमद साहिबा पुत्री आदरणीय वासिफ़ अहमद भट्टी साहिब A Levels in Morden Languages and Sciences

नायाब अहमद साहिबा पुत्री आदरणीय इदरीस अहमद साहिब A Levels--Latin and Sciences

अहमद नाइला सदफ़ साहिबा पुत्री आदरणीय इमदाद अहमद साहिब A Levels-Latin and Sciences

सफ़ीना Tehawdriसाहिबा

पुत्री आदरणीय ताहिर tehawdriसाहिब A Levels-Latin and Mathematics

Waliga मुहम्मद साहिबा पुत्री आदरणीय मुहम्मद अहमद साहिब A Levels in Economy and Mordern Languages

मलीहा सदफ़ चौधरी साहिबा पुत्री आदरणीय नसीरुद्दीन साहिब A Levels in Sciences & Mathematics

राबिया याक़ूब साहिबा पुत्री आदरणीय मुहम्मद याक़ूब ख़ान साहिब A Levels in Healthcare Sciences

सायरा याक़ूब साहिबा पुत्री आदरणीय मुहम्मद याक़ूब ख़ान साहिब A Levels in Pharmaceutical Technology

अतीक़ा अहमद गुल साहिबा पुत्री आदरणीय ताहिर गुल साहिब A Levels in Morden Languages and Sciences

बुशरा तारिक़ साहिबा पुत्री आदरणीय मुख़तार अहमद तारिक़ साहिब A Levels in Sciences and Mathematics

तूबा यूसुफ़ साहिबा पुत्री आदरणीय फ़रीद यूसुफ़ साहिब A Levels in Human Sciences

मैमूना राजपूत भट्टी साहिबा पुत्री आदरणीय मुनव्वर अहमद राजपूत भट्टी साहिब A Levels in General Sciences

आयशा हाश्मी साहिबा पुत्री आदरणीय रफ़ीक़ हाश्मी साहिब A Levels in Business

इफ़राह हाश्मी साहिबा पुत्री आदरणीय रफ़ीक़ हाश्मी साहिब A Levels in Accountancy and Informatics

ज़हरा अहमद साहिबा पुत्री आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब A Levels - Morden Languages and Sciences

नूरुल ऐन ज़फ़र साहिबा पुत्री आदरणीय मुल्क ज़फ़र इक़बाल साहिब A Levels - Economy and Morden Languages

कनज़ा महमूद साहिबा पुत्री आदरणीय मुल्क बशारत महमूद साहिब A Levels--Latin and Sciences

फ़ातिहा एस एच नवेद साहिबा पुत्री आदरणीय एस एच नवेद अहमद साहिब A Levels - General Sciences

मारिया अकबर साहिबा पुत्री आदरणीय अकबर अहमद साहिब A Levels - Morden Languages and Sciences

सबाहत एहसान अल्लाह साहिबा पुत्री आदरणीय एहसान उल्लाह साहिब Bachelor in Medicine with Highest Distinction

हामना जमील साहिबा पुत्री आदरणीय जमील अहमद साहिब Bachelor in Medicine

मलिक राहवील ख़ालिद साहिबा पुत्री आदरणीय मलिक मुहम्मद ख़ालिद साहिब Bachelor of Law with Distinction

फरीन बिरलास साहिबा पुत्री आदरणीय नईम अहमद बिरलास साहिब Bachelor in Applied Linguistics

दुर्रेसमीन अहमद साहिबा पुत्री आदरणीय सईद अहमद साहिब Bachelor in Business Management

सना शाहिद साहिबा पुत्री आदरणीय शाहिद अहमद नसीर साहिब Bachelor in Business Management

सुनदस बिरलास साहिबा पुत्री आदरणीय नईम अहमद बिरलास साहिब Bachelor in Interior Architecture

दर शहवार अहमद साहिबा पुत्री आदरणीय सईद अहमद साहिब Bachelor in Biomedical Laboratory Technology

मंसूरा क़ुरैशी साहिबा पुत्री आदरणीय नसीर क़ुरैशी साहिब Master in Nuclear Energy

कान्ता हाश्मी साहिबा पुत्री आदरणीय ताहिर अहमद हाश्मी साहिब Master of law and Master of Business Administration

डाक्टर नबीला अनवर साहिबा पुत्री आदरणीय मुनव्वर अहमद अनवर साहिब Master of General Medicine with Distinction

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

तक़सीम एवराड की आयोजन के बाद 12 बजकर 30 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया।

तशह्हुद, ताव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :आप लोगों मैं से बहुत सी ऐसी हैं जो यहां पाकिस्तान से प्राय: असुविधा जनक हालात, जो अहमदियों के लिए पैदा किए जा रहे हैं , इस की वजह से आई है। लेकिन शायद ही कोई ऐसी हो या हो सकता है एक दो ऐसी हूँ जो सीधा किसी तकलीफ़ में से गुज़री हूँ। हाँ पाकिस्तान में यह ख़ौफ़ ज़रूर है कि हमारे पति , हमारे बच्चे , हमारे क़रीबी प्रिय ख़तरे में हैं और कोई भी सरफिरा तथा कथित उलमा के कहने और भड़काने पर किसी भी वक़्त नुक़्सान पहुंचा सकता है। यह ख़ौफ़ यह फ़िक्र की तलवार हर अहमदी पर हर वक़त लटक रही है जो पाकिस्तान में मौजूद है। लेकिन यह भी हक़ीक़त है कि प्राय यहां आकर कुछ समय बाद अक्सर लोग खासतौर पर औरतें बच्चे इन सख़्त हालात को भूल जाते है। अक्सर देखने में आया है कि यहां पैदा होने वाली बहुत सी लड़कियां लड़के या जिन्हें यहां रहते हुए एक समय गुज़र गया है वहां पाकिस्तान में अहमदियों पर जो सख़्तियां हैं उन्हें भूल चुकी हैं और जिनके सब क़रीबी अज़ीज़ बाहर आ गए हैं वे लोग तो जानते भी नहीं या उस दर्द को महसूस नहीं करते जो अपने क़रीबियों की वजह से महसूस हो सकता था कि अहमदियों पर कुछ जगह कितनी सख़्तियां होती है। पाकिस्तान में तो क़ानून की वजह से यह सख़्ती अहमदियों से रूह रखी जा रही है और मौलवी को या जमाअत के मुख़ालिफ़ लोगों को खुली छुट्टी है लेकिन पाकिस्तान के इलावा भी कुछ देश हैं जहां अहमदियों को अहमदियत क़बूल करने के बाद सख़्तियों से गुज़रना पड़ता है। इसी तरह यहां आने वाली कुछ दूसरे कम तरक़्क़ी वाले देशों से आई हैं और इसलिए आई हैं या उनके पति इसलिए यहां मुंतक़िल हुए हैं कि इन तरक़्क़ी वाले देशों में बेहतर रोज़गार के अवसर उपलब्ध आएं। बहरहाल जिन कारणों की वजह से भी अक्सरीयत यहां आई है हालात की वजह से आई हैं या बेहतर रोज़गार की तलाश में आई हैं या जैसा कि मैंने कहा कुछ सख़्त हालात की वजह से आई हैं , हमेशा याद रखना चाहिए कि दोनों अवस्थाओं में अल्लाह तआला ने जो दुनियावी लिहाज़ से फ़ज़ल फ़रमाया है और दुनियावी बेहतरी के जो सामान अल्लाह तआला ने पहुंचाए हैं उनकी वजह से अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल नहीं होना। अगर याद रखेंगी तो दुनिया तो मिल ही जाएगी लेकिन साथ ही अल्लाह तआला के बेशुमार फ़ज़लों से हिस्सा लेने वाली भी बनेंगी। ऐसे कई घटनाऐं मिलती हैं जब कुछ औरतें और ख़ानदान तकलीफों से गुज़र कर उन देशों में आए और अल्लाह तआला ने बेशुमार फ़ज़ल फ़रमाए लेकिन बहुत से ऐसे भी हैं जो सख़्त हालात के बावजूद अपने देश में ही रहे और रह रहे हैं लेकिन वहां भी अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया और उन्होंने डट कर उन सख़्तियों का मुक़ाबला भी किया। पाकिस्तान के इलावा कुछ ऐसे देश हैं जैसा कि मैंने कहा वहां ज़ुलम होते हैं और आख़िर वहां अपने अपने देशों में रहने के बावजूद उनको कामयाबियां भी मिलीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं कुछ ऐसी घटनाएं प्रस्तुत करूँगा जो पाकिस्तान के इलावा लोगों के भी हैं ताकि आप लोग जो यहां आई हैं , बैठी हैं उनमें बच्चियां हैं , बच्चे हैं जो जवान हो रहे हैं और उन्हें एक अरसा गुज़र गया है और वे लोग भी हैं जिन को लंबा अरसा रहने की वजह से यह एहसास नहीं कि सख़्तियां क्या होती हैं , उनको भी पता लगे और उनके ईमान में भी इज़ाफ़ा हो। अपनी ज़िम्मेदारीयों की अदायगी और धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखने की तरफ़ ध्यान पैदा हो उस का एहसास बढ़े।

पहली घटनी तो एक पाकिस्तानी औरत की ही है जो सख़्तियों से गुज़रने के बाद कैनेडा गई। सीधा उन पर सख़्ती हुई। अक्सर औरतें तो ऐसी हैं जिनके मर्दों को सख़्तियों से गुज़रना पड़ा या हालात ऐसे पैदा हुए कि सीधा सख़्तियां नहीं भी थीं तो इस की वजह से मुल्क छोड़ना पड़ा लेकिन यह सीधा प्रभावित हुईं और कैनेडा चली गईं। फिर वहां जा कर उन्होंने अल्लाह तआला के फ़ज़लों को बढ़ते हुए भी देखा और अपने पुराने हालात को भुलाया नहीं है। यह औरत आनिसा साहिबा कैनेडा से है। वह लिखती हैं कि जब मैं पाकिस्तान में थी उस वक़्त हमारी फ़ैमिली को कश्मीर से हिजरत कर के फैसलाबाद आना पड़ा। हिजरत की वजह से माली हालात ठीक नहीं थे। इस वक़्त मुझे एक प्राईवेट हस्पताल में बतौर हैड नर्स के बहुत अच्छी नौकरी मिल गई लेकिन कुछ अरसा बाद मेरे इल्म में आया कि इस हस्पताल का हैड डाक्टर जो इंचार्ज था वो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ गंदी ज़बान इस्तिमाल किया करता था। एक रोज़ उसने मुझे अपने दफ़्तर बुलाया और कलिमा पढ़ने को कहा कि तुम्हारा कलिमा किया है। मैंने कलिमा सुनाया और साथ ही उसे कह दिया कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ इस तरह की बातों को नहीं सुन सकती जो तुम कहते हो। इस पर उसने मुझे यह कह कर नौकरी से निकाल दिया कि तुम क़ादयानी हो। अत: उस के बाद फिर वह कैनेडा आ गईं और उनके हालात भी बेहतर हो गए। अत: यह ईमान की मज़बूती है जो हर अहमद को दिखानी चाहिए और याद रखना चाहिए कि यह ईमान की मज़बूती ही है जो हमें अल्लाह तआला का क़ुरब दिलाने वाला बनाती है।

सदर लजना फैसलाबाद ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह की ख़िदमत में ख़त लिखा था और इस में भी ज़िक्र किया कि हस्पताल के डाक्टर ने इस तरह निकाल दिया है तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह ने जवाब दिया था कि जिसने ऐसा किया है इस का हस्पताल और कारोबार ख़त्म हो जाएगा। अत: कुछ अरसा बाद इस शख़्स का हस्पताल, जो मालिक था उस के ख़िलाफ़ अदालत में मुक़द्दमा चला और वह ख़त्म हो गया। तो एक लिहाज़ से अल्लाह तआला ने वहां भी बदला ले लिया कि इस का कारोबार ही ख़त्म हो गया जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को गालियां निकालने वाला था। यह निशान हैं जो हमें नज़र आते है। पाकिस्तान के हालात तो हमारे सामने आते ही रहते हैं और इस की वजह से बहुत से लोग मुल्क से बाहर भी निकल आए हैं जैसा कि मैंने कहा लेकिन दूसरे देशों में भी अहमदी औरतें जिस तरह सख़्ती से गुज़रीं और गुज़र रही हैं उनकी क़ुर्बानियां भी ग़ैर मामूली है। उनकी मिसालें भी बहुत सी हैं कि उन्होंने अपने ईमान को सँभाल कर रखा हुआ है। ये उदाहरण आप लोगों को भी जैसा कि मैंने कहा धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम करने की तरफ़ पहले से बढ़कर तवज्जा दिलाने वाली होनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बंग्लादेश की औरत है। अब बंगला देश के लोग तो प्राय बाहर बहुत कम निकले हैं, इक्का दुक्का या कुछ फ़ैमिलीयाँ आई हैं। इस तरह नहीं आए जिस तरह पाकिस्तान से हालात की वजह से आते हैं। हालाँकि हालात वहां भी बड़े ख़तरनाक रहे , ख़ौफ़नाक रहे और वहां लोग शहीद भी हुए। बहरहाल एक अहमदी औरत थीं सिद्दीक़ा साहिबा जो बतौर इंजीनियर प्राईवेट कंपनी में नौकरी कर रही थीं उन्हों ने 2011 के यू.के के जलसा में शमूलीयत के लिए छुट्टी की दरख़ास्त दी तो इंतिज़ामीया ने पहले छुट्टी दे दी लेकिन बाद में जब उनको पता चला कि यह अहमदी हैं और अपने ख़लीफ़ा से मिलने और जलसा में शामिल होने के लिए जा रही हैं तो इंतिज़ामीया ने कहा कि तुम्हें नौकरी से इस्तीफ़ा देकर जाना पड़ेगा और हम ने छुट्टी नहीं देनी। इस पर महोदया ने फ़ौरन इस्तीफ़ा दे दिया और बाद में उन्होंने मुझे दुआ के लिए ख़त भी लिखा। मैंने यही लिखा था कि अल्लाह तआला आप पर फ़ज़ल फ़रमाएगा और पहले से बेहतर इंतिज़ाम कर देगा। अत: अमीर साहिब लिखते हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसा फ़ज़ल फ़रमाया कि देश में नौकरी की तलाश के लिए ख़ासी भाग दौड़ करनी पड़ती है लेकिन महोदया ने एक जगह दरख़ास्त दी और वहां बग़ैर किसी कोशिश के और भाग दौड़ के उनको शीघ्र वहां इस से बहुत बेहतर नौकरी मिल गई। तो अल्लाह तआला भी फिर ऐसे लोगों को नवाज़ता है जब वे क़ुर्बानियां करते है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर दो अहमदी औरतें जिन्हों ने हर ज़ुल्म बर्दाश्त किया लेकिन धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखा। उनके बाहर आने के भी वहां कोई सामान नहीं थे लेकिन उन्होंने उस की कोई परवाह नहीं की। सूबा बंगाल जो हिन्दुस्तान में है वहां से इन्सपैक्टर साहिब तहरीक

जदीद एक घटना लिखते हैं कि जमाअत अहमदिया बिथारी के वाजिद अली साहिब मंडल मरहूम को 1982 ई मैं अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली। क़बूलयित अहमदियत के बाद बहुत मुख़ालिफ़त का सामना करना पड़ा। यहां तक कि उनके भाई भी सख़्त मुख़ालिफ़ हो गए। ख़ानदान ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया। वाजिद अली साहिब की दो बेटियां फ़ातिमा बेगम और माजिदा बेगम की शादी क़बूले अहमदियत से पहले हो चुकी थी इसलिए मुख़ालिफ़ भाई ने मौक़ा का फ़ायदा उठाते हुए दोनों ग़ैर अहमदी दामादों को वरग़लाया जिससे दोनों दामादों ने अपनी अपनी बीवीयों फ़ातिमा और माजिदा को हर किस्म की तकलीफ़ देनी शुरू कर दी कि शायद बेटियों की वजह से बाप पर असर हो और वह अहमदियत से तौबा कर ले और छोड़ दे। लेकिन बाप ने इस की कोई परवाह नहीं की , उन पर कोई असर नहीं हुआ। आख़िर दामादों ने कोर्ट के माध्यम से अपनी अपनी बीवियों को तलाक़ नामा भिजवा दिया। जो फ़ातिमा थीं वो अभी अहमदी नहीं थीं , वो अपने दो छोटे बच्चों को लेकर वालिदा के घर आ गईं और अहमदियत के बारे में मज़ीद मालूमात हासिल कीं और इसी तरह दूसरी ने भी और मालूमात लें और दोनों ने पढ़ कर , समझ कर अहमदियत इख़तियार कर ली और अहमदियत में शामिल हो गईं। कुछ समय के बाद जो माजिदा थीं उनकी तो कादियान में शादी हो गई और वो तो अल्लाह के फ़ज़ल से ख़ुशहाल ज़िन्दगी बसर कर रही हैं लेकिन फ़ातिमा को क़बूल अहमदियत की बिना पर अपनी ख़ुशहाल ज़िन्दगी क़ुर्बान करनी पड़ी लेकिन फिर भी उनके सिबात क़दम में कोई लग़्ज़िश नहीं आई। महोदया वहां सिलाई का मामूली काम करने लगीं और गुज़ारा कर लेती थीं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अहमदियत के बाद उनका ईमान भी मज़बूत हुआ। लिखने वाले लिखते हैं कि माली क़ुर्बानी भी अपने सामर्थय से दस गुना बढ़कर करती थीं और अहमदियत क़बूल करने के बाद हमेशा उनकी आदत थी और कोशिश थी कि हर किस्म की क़ुर्बानी जमाअत की ख़ातिर देने में उनका क़दम आगे से आगे बढ़ता चला जाए। तो ये थीं क़ुर्बानी करने वाली औरतें जो बाहर भी नहीं आ सकतीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर हिन्दुस्तान की एक मुख़लिस औरत का ज़िक्र करते हुए बंगाल के सर्किल इंचार्ज लिखते हैं कि एक साहिब फ़ज़लुर्रहमान साहिब जो कलकत्ता में टाइपिस्ट थे उन्होंने बैअत की मगर उनकी पत्नी ने उनकी शदीद मुख़ालिफ़त की यहां तक कि शौहर के साथ रहना भी गवारा ना किया और मैके चली गईं लेकिन कुछ अरसा बाद महोदया ने ख़्वाब के आधार पर बैअत कर ली और पति के पास वापस आ गईं और फिर मुख़ालिफ़त का डट कर मुक़ाबला किया । रिश्तेदारों ने , मुल्लाओं ने बड़ा ज़ोर लगाया । रिश्तेदारों ने उनको मारा पीटा भी यहां तक कि उनको इतना अधिक मारा कि इस मार पड़ने की वजह से एक वक़्त ऐसा आया कि उनको हस्पताल में दाख़िल होना पड़ा लेकिन अहमदियत पर साबित-क़दम रहें । इस गांव में उनकी एक ही फ़ैमिली अहमदी थी। उनके शौहर की वफ़ात पर मौलवियों ने बड़ा शोर मचाया कि यहां तुम्हें दफ़न नहीं करने देंगे। इन औरत ने मुबल्लिग़ को फ़ोन किया कि अहमदियों को लेकर आओ ताकि तदफ़ीन की जा सके। मुख़ालिफ़ीन ने क़ब्रिस्तान में दफ़नाने से रोक दिया । बड़ी हिम्मत वाली औरत थीं। उन्होंने कहा कोई बात नहीं अगर क़ब्रिस्तान में नहीं दफ़नाने देते तो मैं उनको अपने घर के सेहन में ही दफ़न कर लूँगी। अत: हमारे अहमदियों ने जनाज़ा पढ़ा और उनके घर के सेहन में ही तदफ़ीन हुई। अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उनके एक बेटे मुअल्लिम भी हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर इसी तरह हिन्दुस्तान की एक और मुख़लिस औरत का ज़िक्र है। नारायण पूर ज़िला खम्मम आंध्रा प्रदेश में बहुत मुख़ालिफ़त की वजह से लोग अहमदियत से दूर हो गए थे। पहले अहमदियत क़बूल की और फिर डर कर ख़ामोशी इख़तियार कर ली। लेकिन दो घर मुख़ालिफ़त में भी साबित-क़दम रहे। उनमें एक बी जान साहिबा थीं जिनकी उम्र 65 साल और उनकी मामूली खेती बाड़ी थी। उन्होंने मुख़ालिफ़त के बाद जलसा सालाना कादियान में शिरकत का इरादा किया। कादियान से जब वापस गईं तो मुख़ालिफ़ीन जिन्हों ने सारे गांव को डराया हुआ था उनके पास आए और धमकी दी कि तेरा पति बूढ़ा है वह मर गया तो जनाज़े में कोई नहीं आएगा , लाश पड़ी रहेगी और सड़ कर कीड़े पड़ जाऐंगे । बी जान साहिबा ने कहा कि मुझे उस की परवाह नहीं । मैं अपने ईमान पर क़ायम हूँ और मेरा ख़ुदा तुम्हें ज़रूर सज़ा देगा। मैंने कादियान में बहुत दुआएं की है। बहरहाल कुछ दिन बाद मुख़ालिफ़त में पेश पेश जो आदमी था वो शंका वाली हालत में मरा हुआ पाया गया। इस का पोस्टमार्टम हुआ और तीन दिन तक उस की लाश लेने कोई नहीं आया और फिर कहने वाले बयान करते हैं कि उस की लाश में कीड़े पड़ गए। तो अल्लाह तआला भी अपने बंदों की , मज़लूमों की जब आहें सुनता है तो एक स्पष्ट निशान के तौर पर उस के परिणाम भी दिखाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर एक औरत इरफाना साहिबा हैं , यह सहारनपुर की हैं वो अपने पति पर बीतने वाली एक दर्दनाक घटना का ज़िक्र करते हुए कहती हैं कि 2008 ई में मुख़ालिफ़ीन अहमदियत की तरफ़ से जो ज़ुल्म तथा अत्याचार का प्रकटन हुआ उसे देखकर रौंगटे खड़े हो जाते है। मैंने उसे ख़ुद देखा है। कहती हैं कि 2006 ई में हम लोगों को अहमदियत के बारे में मालूम हुआ। मेरे शौहर की कपड़े की दूकान थी। अक्सर दोपहर के वक़्त उनके नए साथी जो कि अहमदियत को अच्छी तरह से जानते थे आकर बैठते और दोनों के मध्य घंटों इस बारे में बातचीत होती ,तकरार हुआ करती थी। कहती हैं कि मेरे पति जमाअत इस्लामी से ताल्लुक़ रखते थे और इस वक़्त लगभग आठ साल से सहारनपुर के जमाअत इस्लामी के अमीर भी थे। इसलिए उनकी बेहस भी बड़ी होती थी। कहती हैं कि 2006 ई में मेरा बड़ा बेटा कादियान गया और उसने वहां बैअत कर ली। उस के बाद लगभग एक साल तक उसने बैअत करने की बात हम से छुपा कर रखी। जब यह बात हमें मालूम हुई कि वह अहमदी हो गया है तो इसके बाद मेरे छोटे बेटे ने भी बैअत कर ली। वह उसे भी ख़ामोशी से तब्लीग़ करता रहा। इसके बाद मेरे पति ने और कुछ रिश्तेदारों ने कादियान की ज़यारत का प्रोग्राम बनाया। कादियान आने पर उन्होंने जो कुछ देखा और महसूस किया इसके बारे में कहते हैं कि जो हमारे मौलवी साहिबान कहते हैं कादियान के बारे में ग़लत बातें कहते थे इस से बिलकुल विभिन्न पाया। सब झूठा था और उनमें कोई हक़ीक़त नहीं थी। कादियान से वापसी पर उन्होंने हमारे सामने कादियान की हक़ीक़त बयान की जिसको सुनकर हमारे दिल भी मुतमइन हो गए। अत: कहती हैं कि 27 मई 2008 ई को हम सब ने बैअत कर ली। वही दिन जब लाहौर में ज़ालिमाना तौर पर दो मस्जिदों में हमारे अहमदियों को शहीद किया गया उसी दिन अल्लाह तआला ने इस पूरे ख़ानदान को अहमदियत में शामिल होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई ।

इस के बाद कहती हैं कि इर्द-गिर्द के लोगों ने हम पर शक करना शुरू कर दिया, शायद उनको शक हो गया कि हम अहमदी हो गए है। तो जैसे जैसे वक़्त गुज़रता गया यह शक यक़ीन में बदलता गया और मुख़ालिफ़त तेज़ होती गई। हमारे रिश्तेदारों ने हमारा बाईकॉट कर दिया। लोग हमें कादयानी कह कर तंज़ करने लगे। बच्चों को परेशान किया जाने लगा। मुसलमान दुकानदारों ने हमें सामान इत्यादि देना बंद कर दिया। क़त्ल की और मारने की धमकियां मिलने लगीं। हमारे ख़िलाफ़ प्रोपेगंडा शुरू हो गया और हालात बिगड़ते चले गए। मुख़ालिफ़त ज़ोर पकडती चली गई मगर हम सब पर इस बात का कोई असर नहीं हुआ। हम अपने इरादे पर , अपने ईमान पर मज़बूती से क़ायम रहे। कहती हैं मेरे बच्चों को स्कूल में बहुत सताया जाने लगा और बच्चे साथी तंग करते थे कि तुम लोगों ने पैसे ले कर बैअत की। इन बच्चों को स्कूल के कुछ उस्तादों ने और मौलवियों ने सिखाया था कि इन लोगों ने पैसे लेकर अपना ईमान बेच दिया है। कहती हैं अत: हर तरह से हमें तंग किया जाता था। बच्चों का बाहर निकलना मुश्किल हो गया और हम सब परेशान थे। स्कूल जाना और टीयूशन सैंटर इत्यादि जाना भी बंद हो गया। सारे रिश्तेदारों, मुहल्ला वालों ने सोशल बाईकॉट कर दिया। बात भी कोई नहीं करता था। अत: कि उन्होंने परेशान करने का कोई भी तरीक़ा नहीं छोड़ा। शौहर के साथ भी दूकानदारों ने बुरा सुलूक करना शुरू कर दिया और उनकी दूकान के इर्द-गिर्द कुछ पहरेदार उन्होंने छोड़ दिए ताकि कोई रिश्तेदार हमारे घर ना आ सके। मुसलमान लोगों ने हमारा सामान लेना बंद कर दिया जिसकी वजह से हमारी दुकान का काम दिन-ब-दिन ख़त्म होता जा रहा था। कहती हैं जब मेरे पति घर आते तो दिन-भर के गुज़रे हुए हालात हमें बताते। कहती हैं एक रात लगभग बारे बजे के क़रीब जब हम सो रहे थे तो मुहल्ले के एक लड़के ने शोर मचाना शुरू कर दिया कि तुम लोगों की दूकानें जला दी गई है। घर के सारे मर्द जल्दी जल्दी उठकर दुकानों की तरफ़ चल दिए। वहां जा कर देखा तो आग लगी हुई थी। बहरहाल फ़ायर ब्रिगेड वाले आ गए थे और आग बुझा रहे थे और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ज़्यादा नुक़्सान नहीं हुआ। यह कहती हैं कि इन सब हरकतों के बावजूद अल्लाह तआला के फज़्लसे हम अपने ईमान पर क़ायम रहे और जमाअत के साथ जड़े रहे। कभी मुख़ालिफ़त की वजह से ये बात हमारे दिल में नहीं आई कि अहमदियत क़बूल करने की वजह से हम पर ये ज़ुल्म हो रहा है। कहती हैं बहरहाल जैसे जैसे ज़ुल्म बढ़ते गए हमारे ईमान भी इसी तरह मज़बूत होते चले गए। शहर के मौलवी दिन रात हमारे ख़िलाफ़ जलसे वग़ैरा करने लगे। लोगों को हमारे ख़िलाफ़ भड़काने लगे। बावजूद हिंदुस्तान में होने के शहर का एक हिस्सा मुसलमानों का था, एक हिस्सा हिंदुओं का और मुसलमान इलाक़े में उनकी जितनी मुख़ालिफ़त हो सकती थी की जाती थी। कहती हैं एक रात

मुख़ालिफ़ीन अहमदियत ने हमारे ख़िलाफ़ बहुत बड़े जलसे का आयोजन किया। सारे शहर में लाऊड स्पीकर के माध्यम से जलसा का प्रोग्राम सुनाने का इंतिज़ाम किया गया और बहुत भड़कीली तक़रीरें की गईं ।

कहती हैं इसी रात को हमें ख़बर मिली कि मुख़ालिफ़ीन ने एक अहमदी भाई अफ़ज़ाल अहमद के घर पर हमला कर दिया है और उनको बहुत मारा पीटा गया है , बहुत अधिक ज़ख़मी कर दिया गया। इसके बाद जितने भी सहारनपुर में अहमदी घर थे बारी बारी सब पर हमला किया गया। अगले दिन जुम्अ: की नमाज़ के बाद मुख़ालिफ़ीन ने हमारे घर पर भी हमला कर दिया। हमला करने वालों हमारे ख़िलाफ़ नारेबाज़ी कर रहे थे। इस वक़्त मैं घर पर अकेली थी। मैंने अपने बच्चों को घर के पिछले कमरे में छिपा दिया। मेरे देवर के घर में मुख़ालिफ़ीन ने घुस कर बहुत माली नुक़्सान पहुंचाया। मैं अकेली इन सब का सामना करती रही और उनके आगे हार नहीं मानी। वे लोग आग लगाने ही वाले थे कि पुलिस आ गई। पुलिस ने आकर इन सब पर लाठी चार्ज किया , आँसू गैस का इस्तिमाल किया। संख्या बहुत ज़्यादा थी, पुलिस के कंट्रोल में नहीं हो रही थी ,पुलिस भी डर रही थी। तो बहरहाल पुलिस ने परामर्श दिया कि आप लोग कुछ वक़्त के लिए यहां से चले जाएं , अभी हालात ठीक नहीं और कहती हैं इसी रात हम सहारनपुर छोड़कर उस जगह से कादियान के लिए रवाना हुए लेकिन इन सब हालात के बावजूद इस्तिक़ामत (दृढ़ता) दिखाई । अत: जब ईमान नसीब होता है तो फिर अगर हक़ीक़ी ईमान हो तो इस्तिक़ामत भी मिलती है। औरतों और बच्चों की इस्तिक़ामत मर्दों में भी हौसला पैदा करती है। अगर ये औरतें और बच्चे बुज़दिली दिखाएंगे तो फिर मर्द भी परेशान हो जाते है। अत: ये लोग हैं जो कहीं बाहर नहीं जा सकते लेकिन वहां रह कर मुख़ालिफ़त का सामना कर रहे हैं ज़्यादा से ज़्यादा यह कि कादियान गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर अमीर साहिब गेम्बिया लिखते हैं कि यहां नॉर्थ बंक रीजन के एक क़स्बा में एक औरत सिस्टर तीदा पैदाइशी अहमदी हैं और एक मुख़लिस अहमदी घराने से सम्बन्ध है। क़िस्मत उन्हें एक अजीब मोड़ पर ले आई और इस की शादी एक ग़ैर अहमदी से हो गई। उस का पति एक मज़हबी कट्टर घराने से सम्बन्ध रखता था। वे लोग अफ्रीकन भी बड़े कट्टर मुस्लमान हैं जो शिद्दत-पसंद हैं और मस्जिद का इमाम भी इसी ख़ानदान से मुक़र्रर होता था। इस से अंदाज़ा होता है कि यह जमाअत के भी सख़्त मुख़ालिफ़ थे। इस औरत ने इन सब के होते हुए अपने धर्म को ना छुपाया और सब के सामने इज़हार किया और हमेशा इसी तरह जमाअती प्रोग्राम में शिरकत करती रहीं जैसे पहले करती थीं। लेकिन पति या उस के ख़ानदान के फ़र्द के पीछे कभी उन्होंने नमाज़ नहीं पढ़ी। उन्होंने कहा मैं अहमदी हूँ तुम लोगों के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ूंगी। इसी तरह इस ख़ानदान की नफ़रत और ज़ुल्म का निशाना बनती रहीं लेकिन अपना ईमान नहीं बेचा और साबित-क़दम रहीं। अपने बच्चों का भी जमाअत से मज़बूत सम्बन्ध क़ायम रखा। उनके बच्चे भी बाक़ायदगी से मिशन हाऊस आते और तरिबयती क्लासिज़ में शामिल होते। बहरहाल पति ने तंग करने के बाद कुछ समय के बाद दूसरी शादी कर ली और नौ माह तक इस पहली बीवी को असहाय छोड़ दिया ,कोई परवाह नहीं की। उनके बड़े भाई और जमाअत ने इस की कुछ समय माली मदद की। यह सारा समय भी उसने इंतिहाई सब्र और इस्तिक़ामत से बसर किया। हमेशा दुआ करती और मज़बूत ईमान का इज़हार करती थीं और यह कहते हैं कि पति के ख़ानदान में यह भी रिवाज था(और उनके मज़बूत ईमान की घटना है)कि अन्य हम-साए इकट्ठे मिलकर एक मज़हबी इज्लास करते थे जिस में किसी बड़े इमाम को बुलाया जाता था। इस तक़रीर में जो ग़ैर अहमदी इमाम आया उसने तक़रीर के दौरान कहा कि जब भी कोई अहमदिया मस्जिद में नमाज़ पढ़ता है उसे पच्चीस डलासी दिए जाते हैं। डलासी वहां गेम्बिया की करंसी का नाम है। वह सिस्टर तीदा भी वहां मौजूद थीं उन्होंने खड़े हो कर कहा कि यह इमाम झूठ बोल रहा है क्योंकि मैं ख़ुद हमेशा से अहमदियों की मस्जिद में नमाज़ पढ़ती रही हूँ और एक भी डलासी कभी वसूल नहीं किया। तो यह बात इमाम को शर्मिंदा करने के लिए काफ़ी थी। इस बात पर इस को घर वालों ने और पड़ोसियों ने मस्जिद से निकाल दिया और उन पर काफ़ी सख़्तियां हुईं। बहरहाल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अपने पाँच बेटों और एक बेटी की बड़े अच्छे रंग में उन्होंने तरिबयत की है और ये सब जमाअत से इख़लास का सम्बन्ध रखने वाले हैं और थोड़ी आय के बावजूद बाक़ायदगी से कुछा अदा करने वाली हैं अपने और अपने सारे बच्चों की तरफ़ से हर तहरीक में हिस्सा लेती हैं और एक मिसाली अहमदी बच्चे हैं। क़ुरआन करीम भी पढ़ चुके हैं। यह हैं ईमान बचाने वाली और नेक औरतें जो धर्म पर क़ायम रहेंगी और कामयाब होंगी और अल्लाह तआला के इनामों की भी वारिस बनेंगी ना कि वे जो धर्म में कमज़ोरी दिखाने वाली हैं। ग़रीबी के बावजूद माली क़ुर्बानी में पेश पेश थीं। बावजूद कठिन हालात के, बावजूद घर वालों के विरोध के बच्चों की तरिबयत उच्च रूप से की और उन्हें अहमदियत से जोड़े रखा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: यहां आकर जबकि आप लोगों को मज़हबी और धार्मिक आज़ादी है अपने बच्चों को धर्म सिखाने की तरफ़ ध्यान दिलाएँ। ख़ुद भी धर्म का इल्म बढ़ाने की तरफ़ ध्यान करें। अपने ईमान में मज़बूती पैदा करें। यहां इन तरक़्क़ी वाले मुल्कों में हम देखते हैं कि माहौल भी हर वक़त बिगाड़ पैदा कर रहा है। कई बार मैं बच्चों को समझा चुका हूँ, औरतों को भी, मर्दों को भी और यहां हमें पहले से बढ़कर अपने बच्चों को सँभालने के लिए कोशिश करने की ज़रूरत है। यहां बच्चों को धर्म से जोड़ना एक बहुत बड़ा काम है और जो खासतौर पर औरतों और माताओं की ज़िम्मेदारी है। अत: इस फ़र्ज़ को समझें। इस ज़िम्मेदारी को समझें और याद रखें कि जिस तरह एक दौर दराज़ अफ्रीक़ा के रहने वाले देश की यह औरत दुश्मनों में रहने के बावजूद अपने बच्चोंकी तरिबयत की तरफ़ ख़ास तवज्जा देती रही तो यहां आकर आप लोग जो पढ़ी हुई औरतें हैं आपको तो खासतौर पर इस तरफ़ ध्यान देना चाहिए ताकि आपकी नस्लें हमेशा अहमदियत पर क़ायम रहें और बर्बाद ना हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : फिर अमीर साहिब गेम्बिया ही लिखते हैं कि नॉर्थ बंक की एक सिस्टर टिब्बारा साहीबा हैं। तीन साल हुए उन्होंने अहमदियत क़बूल की। उनकी उम्र 57 साल है। उनके अपने गांव मैं जो दाई इल्लाह अल्लाह औरतें हैं उनमें उनका एक विशेष स्थान है। तीन साल पहले बैअत की और तब्लीग़ और दावत इलल्लाह में एक मुक़ाम हासिल कर लिया। कई कई मील पैदल सफ़र कर के अपने रिश्तेदारों को इस्लाम और अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाने जाती हैं। उनकी कोशिशों के कारण उनके भाई जो कि एक जगह के चीफ़ भी हैं अहमदी हुए और अल्लाह के फ़ज़ल से बड़े पक्के और मुख़लिस अहमदी हैं। ये सारे अन्य लज्ना को जलसा सालाना पर अपना ख़र्च कर के जाने की नसीहत करती हैं। ग़रीब औरतें हैं, कई बार जमाअत देती है लेकिन वे कहती हैं कि नहीं!अपना ख़र्च कर के जाओ। इसके इलावा अन्य चन्दों , चन्दा आम और मज्लिस के जो चन्दे हैं वह अदा करने की तरफ़ ध्यान दिलाती रहती हैं। तो अत: यहां अच्छे हालात में जब आप आ गईं और आपको यहां तब्लीग़ करने में कोई पाबंदी और रोक भी नहीं है तो यहां तो इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम हर घर में पहुंचाने के लिए आपको तय्यार रहना चाहिए और लज्ना को और हर औरत को व्यक्तिगत तौर पर भी पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए और बाक़ायदा मंसूबा करना चाहिए। अगर उन्होंने मुश्किल हालात में भी तब्लीग़ को मुक़द्दम किया हुआ है और धर्म का पैग़ाम पहुंचा रही हैं तो आप भी अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए अल्लाह तआला के पैग़ाम को घर-घर पहुंचाने का इरादा करें और इस के लिए सबसे पहला क़दम यही है कि अपने आपको धार्मिक शिक्षा से और धार्मिक इलम से तैय्यार करें। ख़ुद अपने अंदर इल्म पैदा करें। अपने बच्चों की सही रंग में तरिबयत करें। कुछ मौक़ों पर कुछ अहमदी औरतों ने मुर्दों से बढ़कर जुर्रत को प्रकट किया है और ऐसी ईमानी ग़ैरत दिखाई है कि इन्सान की अक़ल हैरान रह जाती है। अत: मालदा बंगाल के सर्किल इंचार्ज लिखते हैं कि 2005 में सर्किल मालदा की बीर गाछी जमाअत में अहमदिया मस्जिद की बुनियाद रखने के वक़्त मुख़ालिफ़ीन अहमदियत की तरफ़ से बहुत मुख़ालिफ़त हुई। कुछ लोग लड़ाई झगड़ा करने पर उतर आए। उस वक़्त हमारी एक औरत ज़कीया साहिबा ने अपनी ईमानी जुर्रत का मुज़ाहरा किया और अपने हाथ में एक चाक़ू लेकर मुख़ालिफ़ीन अहमदियत के सामने आ गईं और कहने लगीं कि अगर किसी के अंदर हिम्मत है तो अब आगे आकर हमारी मस्जिद की तामीर में रूकावट डालो। उनकी इस हिम्मत और जोश को देखकर सारे मुख़ालिफ़ीन डर गए और इसी वक़्त वहां से भाग गए और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब जमाअत में मस्जिद के साथ एक वहां मुअल्लिम का घर भी तैय्यार हो चुका है और बाक़ायदा पाँच वक़्त नमाज़ होती हैं वहां। अब ये उस औरत की ईमानी जुर्रत थी जो मर्दों के लिए भी नमूना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : ये लोग तो बाहर नहीं आ सकते कि अपनी मुश्किलों को दूर कर सकें लेकिन फिर भी साबित-क़दम हैं तकलीफों को बर्दाश्त कर रहे हैं और इस तकलीफों के बावजूद उनके ईमान मज़बूत हैं। यहां आने वालों को आसानियां मिलने के बाद इस बात का किस क़दर ख़्याल रखना चाहिए कि अपने ईमान को मज़बूत करें , अपने ईमानों को बचाएं और पहले से बढ़कर व्यावहारिक रूप से र अपने आपको एक सच्चा और हक़ीक़ी अहमदी बनाएँ। क़ुरआन करीम के हुक्मों पर अनुकरण करने की कोशिश करें ना यह कि इस माहौल में गुम हो जाएं। अपने बच्चों को भी नसीहत करें। लड़कियों को भी याद रखना चाहिए कि उनके माता पिता का यहां आना, उनके

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 23 May 2019 Issue No. 21

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

ख़ानदानों का यहां आना धर्म की वजह से है। इसलिए आप लोगों ने भी दुनिया में गुम नहीं होना बल्कि धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखना है और यही चीज़ है जिस से आपको दुनिया में भी बक़ा है और अगले जहान में भी बक़ा है और आपका हर कर्म उस के अनुसार हो जो अल्लाह तआला हम से चाहता है।

कुछ आदेश अल्लाह तआला ने बड़े स्पष्ट रूप से दिए हुए हैं। पर्दे का हुक्म है। अब पर्दे की पाबंदी करना हर औरत की ज़िम्मेदारी है, हर बच्ची की ज़िम्मेदारी है। अपने लिबास को लज्जा वाला लिबास बनाना हर औरत और बच्ची की ज़िम्मेदारी है और यही नमूने हैं जो अगली नस्लों मैं फिर क़ायम होंगे। यही नमूने हैं जो जमाअत की इन्फ़िरादियत को भी क़ायम रखेंगे। यही नमूने हैं जो आपको तब्लीग़ के मैदान में भी काम आएँगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह नहीं है कि पश्चिम में आकर लोग पर्दे को भूल जाते हैं। यहां भी कुछ ऐसे हालत पैदा होते हैं जिनकी वजह से यहां के जो ग़ैर मज़हबी संस्थाए हैं या वे लोग हैं जिनका मज़हब से कोई सम्बन्ध नहीं और इदारों के लीडर हैं वे अहमदी औरतों के सामने रोकें खड़ी करते हैं और सबसे बड़ा एतराज़ यही होता है कि तुम ने पर्दा नहीं करना, तुमने हिजाब नहीं लेना लेकिन जिनका ईमान मज़बूत है वे अपने नमूने दिखाती हैं।

यहां कैनेडा का एक उदाहरण है यहां भी एक औरत थीं, उन का नाम कहकशां है और वह कहती हैं कि जब मैंने पढ़ाई पूरी कर ली तो मैं जॉब करना चाहती थी और बहुत सी जगहों पर जॉब के लिए अप्लाई किया लेकिन योग्यता होने के बावजूद मेरे पर्दे करने की वजह से मुझे जॉब नहीं दी गई। मैंने अपने आप से वादा किया था कि चाहे कुछ भी हो मैं पर्दा नहीं छोड़ूँगी और अल्लाह तआला ने मुझे इस्तिक़ामत दी और मैंने पर्दे की वजह से कई नौकरियों को छोड़ दिया। तो मज़बूत ईमान वालों की यह निशानी भी है। यहां इन मुल्कों में भी , जर्मनी में भी , यू.के में भी कुछ स्थानीय लोग हैं, अंग्रेज़ हैं, जर्मन हैं उन्होंने अहमदियत क़बूल की है तो बग़ैर किसी झिझक के , बग़ैर किसी परेशानी के अपने पर्दे का जो स्तर है इस को क़ायम किया है। यह नहीं कि पाकिस्तान से पर्दा करती आएं और यहां आकर पर्दे उतार दिए या अपनी अगली नस्लों में पर्दे को रिवाज नहीं दिया। पर्दे की एक बुनियादी शिक्षा है, क़ुरआन शरीफ़ में इस का स्पष्ट तौर पर हुक्म है। अत: जब आप नमाज़ों की तरफ़ ध्यान दें जब आप माली क़ुर्बानियों की तरफ़ ध्यान दें तो अल्लाह तआला के बाक़ी आदेश जो हैं उनकी तरफ़ भी ध्यान दें कि इसी से हमारी इस दुनिया में भी कामयाबी है और अगले जहान में भी कामयाबी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: इस तरफ़ विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। ईमान की मज़बूती के बहुत सारी घटनाएं है। अभी जर्मनी में ही मुझे फ़िलस्तीन से आई हुई तीन बहनें मिलें और उनको अपने ख़ानदानों की तरफ़ से बड़ी परेशानी का सामना है। पतियों की तरफ़ से परेशानी का सामना है, बल्कि अदालत में मुक़द्दमे चल रहे हैं। उनको हुक़ूक़ से महरूम कर रहे हैं, बच्चों से महरूम कर रहे हैं लेकिन इस के बावजूद जब मैंने उनसे पूछा कि तुम ईमान पर क़ायम हो तो उन्होंने कहा कि हाँ हमारे ईमान को कोई नहीं हिला सकता। हम मज़बूती से अहमदियत पर क़ायम हैं और ईमान पर क़ायम हैं और मुख़ालिफ़त का हर तरह मुक़ाबला करेंगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: ये घटनाएं आपको ये एहसास दिलानी वाली होनी चाहिएं कि अल्लाह तआला ने जब आपके बेहतर हालात किए हैं, आर्थिक लिहाज़ से भी और अपने धर्म पर अपनी मर्ज़ी से अमल करने के लिहाज़ से भी तो आप पर किस क़दर ज़िम्मेदारी आती है कि अपनी हालतों को धर्म के अनुसार करें। धर्म के आदेशों को हर दूसरी चीज़ पर प्रथामिकता दें। इन औरतों की क़ुर्बानियों को सामने रखें जो आज भी धर्म के लिए तकलीफ़ें उठा रही हीं ओर बर्दाश्त कर रही हैं। अगर यह एहसास मिट गया और यहां की रौनक़ों ने , यहां की चकाचौंध ने , यहां की दुनियादारी ने आपको सिर्फ दुनिया में डुबो दिया जैसा कि मैंने कल ख़ुत्बा में भी ज़िक्र किया था तो फिर ख़ुदा तआला को भी किसी की परवाह नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हमेशा याद

पृष्ठ 1 का शेष

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ (आले इम्रान 56)फिर اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ (अलमाइद :118) यह बहाना बिलकुल झूठा है कि तवफ़्फ़ी के अर्थ कुछ और हैं। इब्न अब्बास रज़ी अल्लाह अन्हो और ख़ुद हादी कामिल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के अर्थ اماتت "अमातत्" के कर दिए हैं। ये लोग भी जहां कहीं शब्द तवफ़्फ़ी इस्तेमाल करते हैं तो अर्थ अमातत् और रूह का मारना अभिप्राय लेते हैं। क़ुरआन ने भी हर एक जगह इस शब्द के यही अर्थ वर्णन किए हैं अत: उस का हाथ तो कहीं ना पड़ा। और जब मसीह नासरी की वफ़ात साबित है तो आने वाला ज़रूर है कि उम्मत में से कोई हो। जैसे कि اِمَامُكُمْ مِنْكُمْ (अलहदीस) इस को स्पष्ट करता है। वे लोग जो नेचरी हैं। उनकी ख़ुश क़िस्मती है कि वे इस परीक्षा से बच गए क्योंकि वफ़ाते मसीह के तो वे मानने वाले ही हैं। और मसीह मौऊद का ज़िक्र इतनी निरन्तरता रखता है कि जिस निरन्तरता से इनकार असम्भव है। इस के अतिरिक्त कुरआन के इशारे भी आने वाले के गवाह हैं तो अक़लमंद इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि मसीह आएगा।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 38 से 40)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

रखें कि हक़ीक़ी ज़िन्दगी दुनिया में डूबने में नहीं है बल्कि धर्म पर क़ायम होने में है। यही अल्लाह तआला ने फ़रमाया है और इसीलिए रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने प्रादुर्भाव फ़रमाया था ताकि रुहानी ज़िन्दगी प्रदान करें। यही आपके बारे में क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है और इसी मक़सद के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम को इस ज़माना में भेजा गया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अन्त पर फ़रमाया :अत: अगर अपनी और अपनी औलादों की हक़ीक़ी ज़िन्दगी चाहती हैं तो अपने अहद को धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखने ,अपने इस अहद को कि हम धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखेंगी उसे पूरा करें। हर वक़त अपने सामने रखें। अल्लाह तआला सब को उस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 1 बज कर 30 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद लज्ना की मेम्बरों और नास्रात के निम्नलिखित विभिन्न ग्रुपस ने विभिन्न ज़बानों में दुआ की नज़्में और तराने प्रस्तुत किए। सबसे पहले अरबी, फ्रैंच और फ़लामिश ज़बानों में हमद तथा नात प्रस्तुत की गई। इसके बाद हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

आओ लोगो कि यहीं नूरे ख़ुदा पाओगे
लू तुम्हें तौर तसल्ली का बताया हमने

ख़ुश अलहानी से प्रस्तुत किया गया।इस के बाद अरब लज्ना ने तराना प्रस्तुत किया। इस के बाद नास्रात और वाक़फ़ात ग्रुप ने दुआ की नज़्में और तराने प्रस्तुत किए। बंगला ज़बान में भी एक ग्रुप ने तराना प्रस्तुत किया। इस के बाद उर्दू भाषा में ख़िलाफ़त, ख़लीफ़ा वक़्त से इशक़ तथा वफ़ा और जलसा सालाना के बारे में से तराने प्रस्तुत किए गए और पंजाबी भाषा में भी एक तराना प्रस्तुत किया गया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कम उम्र वाले बच्चों के हाल में तशरीफ़ ले आए। औरतें ने अपने प्यारे आक़ा का दीदार किया और दर्शन का सौभाग्य हासिल किया। इस के बाद 2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर वापस मिशन हाऊस अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad